



नव जनवाचन आंदोलन



पुस्तक सूची

भारत ज्ञान विज्ञान समिति



भारत ज्ञान विज्ञान समिति

वाई डब्ल्यू ए हॉस्टल नं. 2, जी-ब्लॉक,
साकेत, नई दिल्ली- 110 017

फोन नं.: 011 - 2656 9943, 26569773

Email : bgvsdelhi@gmail.com, bgvs delhi@yahoo.co.in

जनवाचन बाल पुस्तकमाला

1. बिल्लियों की बारात

वैंडा गैग



वैंडा गैग विश्व बाल साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार न्यूबेरी मैडिल से सम्मानित हैं। 1928 में, उन्होंने इस पुस्तक - 'मिलियंस ऑफ कैट्स' को लिखा था। इसके चित्र- जो कि वुडकट्स हैं, देखने योग्य हैं। पिछले 70 सालों में इस पुस्तक के अंग्रेजी में पचासों संस्करण छपे और सारी दुनिया में करोड़ों बच्चों ने इसका आनंद लिया। हिंदी में बाल साहित्य की यह अनूठी कृति पहली बार छपी है।

सहयोग राशि : 12 रुपये

2. दानी पेड़

अरविन्द गुप्ता

शेल सिल्वरस्टाइन की मूल कहानी 'दी गिविंग ट्री' से प्रेरित बेहद सुंदर कहानी। पेड़ हमें फल देते हैं, हमें छाँव देते हैं, घर देते हैं, नाव देते हैं, ऑक्सीजन देते हैं। परंतु हम उन्हें क्या देते हैं? पेड़ों की महत्त्वता और उनकी दयालू प्रकृति को उजागर करने वाली सदाबहार कहानी। एक ऐसी कहानी जो हर उम्र के इंसान को पसंद आएगी।

सहयोग राशि : 10 रुपये

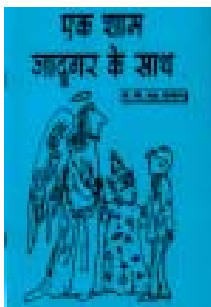


3. एक शाम जादूगर के साथ

जे.बी.एस. हैल्डेन

सन् 1928 में 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' पहली बार छपी। इस पुस्तक को पढ़ कर सारी दुनिया के बच्चे गद्गद हो गए। मिस्टर लीकी एक नायाब पात्र हैं। उनको लेकर बच्चे, हैल्डेन को लगातार पत्र लिखते रहे। इसी संकलन में से ली गई एक बेहद पठनीय कहानी।

सहयोग राशि : 10 रुपये



4. अक्षर चित्र

विष्णु चिंचालकर

अक्षरों में न जाने कितने सारे जानवर, पक्षी, इंसान, घर आदि छिपे हैं। इस पुस्तक में युगपुरुष गुरुजी विष्णु चिंचालकर ने अक्षरों की केवल कुछ सम्भावनाएं दिखाई हैं। बच्चे खुद ही उनमें कितने नए-नए चेहरे खोजेंगे। धीरे-धीरे ये बेजान अक्षर बच्चों के गहरे मित्र बन जाएंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



5. अच्छा स्कूल

जॉन होल्ट



'हाऊ चिल्ड्रन फेल' के लेखक, विश्व-प्रसिद्ध शिक्षाविद् जॉन होल्ट ने दुनिया के नामी-गिरामी स्कूलों को देखा पर वे उनके गले नहीं उतरे। पर डेनमार्क के एक छोटे-से गरीब स्कूल ने उनका दिल जीत लिया। यह दुनिया के बेहतरीन स्कूल की कहानी है। शिक्षा के लिए पैसों की नहीं, दर्शन और दृष्टि की आवश्यकता होती है। हरेक जिंदादिल शिक्षक और माता-पिता के लिए अनिवार्य पुस्तक।

सहयोग राशि : 12 रुपये

6. मीशका का दलिया

निकालाई नोसोव

रूस के मशहूर बाल लेखक निकोलाई नोसोव की दिलचस्प कहानी। एक दिन जब माँ बाहर चली जाती हैं तो दो मित्र मीशका और कोलया खुद खाना बनाने की कोशिश करते हैं। कितना दलिया लें और उसमें कितना पानी डालें इसका उन्हें कोई अंदाज नहीं होता है। दलिया पकाते-पकाते उन्हें नानी याद आ जाती है। उनके कारनामों की दास्तां इस कहानी में पढ़ें।

सहयोग राशि : 10 रुपये



7. प्रमुख के नाम पत्र

चीफ सीएथल



पर्यावरण पर पिछले डेढ़ सौ वर्षों में लिखा हुआ सबसे संजीदा दस्तावेज़। गोरी सरकार, अमरीका के मूल आदिवासियों की ज़मीन को, बंदूक की नोक पर हड़पना चाहती थी। तब आदिवासियों के एक सरदार-चीफ सीएथल ने अमरीकी राष्ट्रपति को यह पत्र लिखा। यह पत्र पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति पर एक करारा तमाचा है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



8. हमारी नाव चली

डॉ. एस.पी. खत्री

छंदों में विज्ञान। इस पुस्तक में तैरने के सिद्धांत और नावों एवं जहाजों के इतिहास को बेहद रोचक और गेय छंदों में पेश किया गया है। एक बार सुनते ही बच्चों को ये छंद याद हो जाएंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये

9. इक्का! ताँगा! मोटर!

डॉ. एस.पी. खत्री

डॉ. खत्री को बहुत कम लोग जानते हैं। वो आजादी से पहले इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाते थे और हिंदी में कविता लिखते थे। इस पुस्तक को आजादी के दौर में लीडर प्रेस ने छापा था। इसमें यातायात का इतिहास, बहुत ही सुगम और सरल छंदों में दिया गया है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



10. स्वार्थी राक्षस

ऑस्कर वाइल्ड

अमरीकी कहानीकार ऑस्कर वाइल्ड की मार्मिक कहानी 'द सेल्फिश जायंट' का हिंदी रूपांतरण। कहानी एक भयानक राक्षस और एक निरीह बच्चे की है। बच्चा अपनी सरलता, सहजता से राक्षस को अत्यंत मानवीय और दयालू बना देता है। दिल को छू लेने वाली दुनिया की जानी-मानी क्लासिक।

सहयोग राशि : 10 रुपये



11. फुगो का वह दिन

जेम्स ए. स्मिथ

यह एक जिज्ञासू बच्चे हेनरी की कहानी है। हेनरी हमेशा कुछ-न-कुछ वैज्ञानिक प्रयोग करता रहता है। एक दिन वो साबुन के घोल में कुछ कोलतार मिलाकर एक बहुत बड़ा साबुन का फुग्गा बनाता है। फुग्गा पहाड़ी से लुढ़कता हुआ और सारी दुनिया को लपेटता हुआ नीचे आता है। आगे का हाल जानने के लिए इस रोचक वैज्ञानिक कथा को पढ़ें।

सहयोग राशि : 10 रुपये



12. विश्व की कहानी

डॉ. एस.पी. खत्री

दुनिया कैसे बनी? इस पूरे ब्रह्मांड में हमारा स्थान कहाँ है? असंख्यों टिमटिमाते तारे क्या सूर्य हैं या ग्रह हैं? ऐसे प्रश्न हरेक बच्चे और इंसान के दिमाग में आते हैं। इस पुस्तक में सरल और गेय छंदों के जरिए विश्व की उत्पत्ति को समझाया गया है। इसमें एक ओर विज्ञान का ज्ञान है तो दूसरी ओर कविता का मनोरंजन है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



13. बच्चे कैसे बनते हैं?

एंड्रू एंड्री और स्टीवन शेष

आज सारी दुनिया एंडस और एच.आई.वी. जैसी भयंकर बीमारियों के ज्वालामुखी की कगार पर खड़ी है। परंतु बच्चों को बुनियादी सेक्स संबंधी शिक्षा से अब भी वंचित रखा गया है। इस चित्रात्मक किताब से बच्चे समझ सकते हैं कि पौधों में बीज कैसे बनते हैं, मुर्गी के चूजे कैसे पैदा होते हैं और कुत्ते के पिल्ले कैसे जन्म लेते हैं। अंत में नन्हें-मुन्ने, मनुष्य के बच्चे दुनिया में कैसे जन्म लेते हैं, इसे समझाया गया है। आज के युग में बच्चों के लिए बेहद जरूरी किताब।

सहयोग राशि : 12 रुपये



14. छिपा रहस्य

क्वेंटन रेनाल्ड

घोड़ों पर आधारित दो रोचक अलग-अलग कहानियां। पहली कहानी एक बूढ़े गाड़ीवान और उसके घोड़े के बीच गहरे प्रेम के बारे में है। गाड़ीवान आंखों से देख नहीं सकता था परंतु घोड़ा उसका पथ प्रदर्शक था। दूसरी कहानी में, दो एक-समान घोड़ियां हैं। उनमें कौन माँ है और कौन बेटी है, इसका पता लगाना है। पूना के समझदार नाना पेशवा इसका हल कैसे खोजते हैं?

सहयोग राशि : 10 रुपये



15. आखिरी पत्ता

ओ. हेनरी

मशहूर कहानीकार ओ. हेनरी की विश्वविख्यात कृति 'द लास्ट लीफ' का हिंदी रूपांतरण। यह कहानी एक शराबी, बूढ़े असफल चित्रकार की है जो अपनी अंतिम मास्टरपीस कलाकृति -आखिरी पत्ते को पेंट करके, एक मासूम बच्ची की जान बचाता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये





16. तोता

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

शिक्षा के नाम पर स्कूलों में, लाखों-करोड़ों बच्चों की सृजना को, रोजाना कुचला जाता है। पाठ को रटना और उन्हीं शब्दों में इम्तहान में उलटी कर देना, यही काम हमारे शिक्षाविद् कर रहे हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता का शिक्षा की स्थिति पर एक सटीक और पैना व्यंग्य जो आपकी अंतर्दृष्टियों को झकझोर देगा।

सहयोग राशि : 10 रुपये

17. विज्ञान के प्रयोग

कीथ वॉरेन

पृथ्वी गोल है इसका अंदाज बच्चे एक टूटे मटके से लगा सकते हैं। इस पुस्तक में कई सस्ते, बिना लागत के वैज्ञानिक प्रयोग सुझाए गए हैं। कीथ वॉरेन यूनिसेफ के परामर्शदाता हैं और उन्होंने बहुत श्रम और लगन से तीसरी दुनिया के शिक्षकों और बच्चों के लिए इन रोचक प्रयोगों को संजोया है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



18. खेल खेल में शिक्षा

विष्णु चिंचालकर

यह पुस्तक हर पत्ती, टहनी, तिनके और प्राकृतिक वस्तु में विलक्षण नमूने खोजने की सूझ देती है। हमारे आसपास कला का अथाह समुद्र बिखरा पड़ा है, फिर भी हम उसे नहीं देखते हैं। इस किताब में कला को देखने का एक नजरिया बताया गया है। इस दृष्टिकोण के हिसाब से तुच्छ वस्तु में भी कोई न कोई कला छिपी होती है। बस सच्ची आँखों से देखने की जरूरत है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



19. अँगूठे से चित्र

अरविन्द गुप्ता

अँगूठे को स्टैम्प पैड पर गड़गड़ इससे कागज पर ठप्पे बनाए जा सकते हैं। इन अँगूठों के ठप्पों से अनेकों विचित्र वस्तुएँ—जानवर, फल, फूल, पेड़, कीड़े-मकौड़े न जाने क्या-क्या बनाना संभव है। इस पुस्तक से प्रेरित होकर बच्चे अपनी कल्पना से स्वयं अनेकों नए-नए चित्र बनाएंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



20. रेलगाड़ी

हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

किसने नहीं सुने फिल्म 'आशीर्वाद' में अशोक कुमार द्वारा गए ये अमर बालगीत - 'रेलगाड़ी, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक, बीच वाले स्टेशन बोले रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक' और 'नानी की नाव चली, नीना की नानी की नाव चली, लम्बे सफर पर'। आज 30 साल बाद भी, बच्चे जब इन गीतों को सुनते हैं, तो मस्ती में झूम जाते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

21. हिरनौटा

दमीत्री मामिन सिबियार्क

रूसी कहानी का हिंदी रूपांतरण। बूढ़ा शिकारी येमेल्या अपने पोते ग्रिशूक के साथ अकेले रहता है। ग्रिशूक के माँ-बाप मर चुके हैं। ग्रिशूक अपने दादा से एक नन्हे हिरन का शिकार करने का आग्रह करता है। बूढ़ा जंगल में भटकता है और अंत में उसे नन्हा-सा हिरन दिखता है। परंतु बूढ़ा उस पर गोली नहीं चलाता है। हिरन के बच्चे को देख उसे अपने अनाथ पोते की याद आ जाती है। एक मार्मिक कथा।

सहयोग राशि : 10 रुपये



22. नन्हे आर्थर का सूरज

हैडजैक गुलनज़रायन

एक अनूठी बाल-केंद्रित कहानी। आर्थर एक नन्हा लड़का है। बारिश के दिन हैं और उसकी दादी की कमर में गठिया का दर्द है। अगर धूप निकले तो दादी को कुछ चैन पड़े। आर्थर को बादलों पर बड़ा गुस्सा आता है। वो अपनी खिलौने वाली बंदूक से बादलों का सफाया करता है और फिर एक गर्म पीले सूरज का चित्र बनाता है जिसकी गर्मी से दादी की कमर का दर्द एकदम रफूचक़र हो जाता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

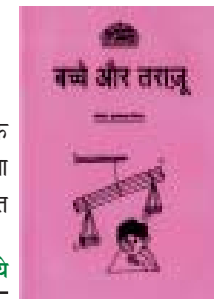


23. बच्चे और तराजू

जोस एल्सटगीस्ट

'यूनेस्को सोर्स बुक फार साइंस इन द प्राइमरी स्कूल' से अनूदित ये सुंदर पुस्तक पहली बार हिंदी में उपलब्ध। बच्चे आम चीजों से कई प्रकार के सरल तराजू बना सकते हैं और उनसे लीवर संबंधित प्रयोग कर सकते हैं। इसमें कार्ड को संतुलित करना और मोबाईल बनाने की तरकीबें भी बताई गई हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये





24. मेरा जादुई स्कूल

डॉ. अभय बंग

लेखक गांधीजी द्वारा वर्धा में स्थापित बुनियादी तालीम स्कूल में पढ़े थे। यहाँ उन्होंने इस अद्भुत स्कूल के आप बीते कुछ अनुभवों को अंकित किया है। किस प्रकार उन्होंने गौशाला में पानी की टंकी बनाकर असली गणित सीखी। किस तरह उन्होंने रसोईघर में कम लागत में पौष्टिक भोजन बनाना सीखा। काश! इस प्रकार के स्कूल आज होते।

सहयोग राशि : 10 रुपये

25. सडाको और कागज़ के पक्षी

एल्लिनेर कोयर

जब हिरोशिमा पर एटम बम गिरा तो सडाको केवल दो साल की थी। नौ साल बाद उसे कैंसर हो गया। अब बचने की एक ही उम्मीद थी। उसने एक हजार कागज़ के पक्षी मोड़ने की ठानी। क्या हुआ? क्या सडाको बच पाई? यह जानने के लिए आँखों को नम कर देने वाली सत्य घटना अवश्य पढ़ें। कहानी पूरे जोर से युद्ध की खिलाफत करती है। शांति-प्रेमी, अमन-चैन से जीने वाले व्यक्ति के लिए अनिवार्य पुस्तक।

सहयोग राशि : 10 रुपये



26. बच्चे दर्पण और प्रतिबिम्ब

जोस एल्सटगीस्ट

यूनेस्को परामर्शदाता द्वारा लिखी हुई इस पुस्तक में दर्पण को लेकर कई गतिविधियाँ बताई गई हैं। जब बच्चे अपने हाथों से खुद प्रयोग करते हैं तभी उनको सिद्धांत की सच्ची समझ आती है। इसमें दर्पण से करने योग्य कई मजेदार और रोचक गतिविधियाँ और क्रियाएँ सुझाई गई हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

27. बच्चे और पर्यावरण

जोस एल्सटगीस्ट

पर्यावरण महत्वपूर्ण है और अपने आसपास के पर्यावरण से बच्चे बहुत कुछ आसानी से और ठोस रूप में सीख सकते हैं। इस पुस्तक में अपने परिवेश को खोजने और जांचने-परखने के तरीके बताए गए हैं। कैसे पौधों और खरपतवार को इकट्ठा करें और उन्हें अलग-अलग समूहों में रखें। आज पर्यावरण-शिक्षण महत्वपूर्ण विषय है और यह उस विषय पर एक सरल और सुंदर पुस्तक है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



28. बच्चे और पानी

जोस एल्सटगीस्ट

पानी एक ऐसी चीज़ है जो सामान्यतः सभी जगह उपलब्ध है। पानी से बच्चे अनेकों वैज्ञानिक प्रयोग कर सकते हैं। जब बच्चे पानी से खेलेंगे तभी वे पानी के गुणधर्मों से अच्छी प्रकार अवगत हो पाएंगे। इस पुस्तक में कम खर्चे, और सस्ते, आसानी से उपलब्ध सामान से प्रयोग करने के तरीके सुझाए गए हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

29. खुशियों का स्कूल

अरविन्द गुप्ता

लेनिन का बचपन, प्रेस्टोली स्कूल, टेडी ओनील, 'बाल हृदय की गहराईयों में' के वसीली सुखेम्सींस्की, जॉन होल्ट, मिराम्बिका, हेलन केलर, गांधीजी, सृजना स्कूल, जवाहरलाल नेहरू, पार्क स्कूल के अनुभवों और अन्य प्रेरक प्रसंगों का संग्रह।

सहयोग राशि : 10 रुपये



30. आँखों की चमक

अरविन्द गुप्ता

मॉरिया मांटेसरी, गिजुभाई, ए.एस.नील का स्कूल समरहिल, सिल्विया एंश्टन वार्नर, लक्ष्मी आश्रम, नानतिन बाड़ी, अंतोन मकारेंको की गोर्की कालोनी, जानुज कोचार्क, जॉन होल्ट, गांधीजी आदि महान शिक्षाविदों के प्रयोगों की झलकियाँ।

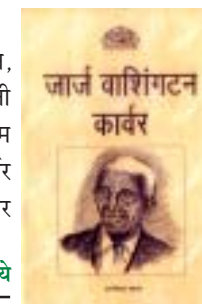
सहयोग राशि : 10 रुपये

31. जार्ज वाशिंगटन कार्वर

अरविन्द गुप्ता

एक महान नीग्रो वैज्ञानिक के अथक प्रयासों की अमर कथा। अनाथपन, गरीबी, रंगभेद के तीखे प्रहारों को झेलते हुए भी कैसे कार्वर ने अपनी इंसानियत को बरकरार रखा और हमेशा दूसरों की भलाई के लिए काम किया। कार्वर ने अमरीका में मूंगफली से लगभग 300 व्यंजन बनाए। कार्वर ने गांधीजी के साथ भी पत्र व्यवहार किया। उनका प्रेरक जीवन दुनिया भर के दिलों का हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

सहयोग राशि : 10 रुपये





32. बोबक बकरा

मनरो लीफ

बोबक बकरा, नेताओं के पीछे-पीछे घूमते हुए परेशान हो जाता है। अंत में वो निश्चय करता है कि अब वो एक जगह से दूसरी जगह केवल इसलिए नहीं जाएगा क्योंकि दूसरे लोग भी वहाँ जा रहे हैं। अब वो खुद सोचेगा कि उसे कहाँ जाना है? क्यों जाना है और कैसे जाना है? अब बोबक खुद अपने आप सोचता है। वो पहले से कहीं ज्यादा खुश है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

33. लुई ब्रेल

अरविन्द गुप्ता

डेढ़ सौ वर्ष पहले अंधे बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें नहीं थीं। अंधे बच्चों के लिए पढ़ने की किताबों का आविष्कार लुई ब्रेल ने किया। लुई के पिता चमड़े का काम करते थे। तीन बरस का लुई मोची के सूजे से खेलते हुए अंधा हो गया। कई वर्षों बाद उसने इसी सूजे से कागज पर छेद करके ब्रेल लिपि का आविष्कार किया। इस महान आत्मा की प्रेरक जीवनी को अवश्य पढ़ें।

सहयोग राशि : 10 रुपये



34. नन्ही राजकुमारी और चंद्रमा

जेम्स थर्बर

प्रसिद्ध व्यंग्यकार जेम्स थर्बर की सुंदर कहानी जो बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी रास आएगी। नन्ही राजकुमारी चंद्रमा मांगती है और उसकी जुगाड़ करने में पूरा राज्य जुट जाता है। जहाँ बड़े-बड़े विद्वान हार मान लेते हैं वहाँ दरबार का विदूषक सफल होता है। वो सफल इसलिए होता है कि क्योंकि समस्या का हल नन्ही राजकुमारी खुद ही सुझाती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

35. मुर्गी के चूजे

निकोलाई नोसोव

दो शरारती लड़के मुर्गी के अंडों को कृत्रिम रूप से सेने के लिए एक गरम डिब्बा यानी इंक्यूबेटर बनाते हैं। उनको किन-किन दिक्कतों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और बाद में वो कैसे अपनी मंजिल तक पहुँचते हैं इसकी जबरदस्त दास्तां। बच्चे इस सर्वश्रेष्ठ रूसी कहानी को कभी नहीं भूलेंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



53. लड़की क्या है? लड़का क्या है?

कमला भसीन

लड़की क्या है? लड़का क्या है? बरसों से चली आ रही रूढ़ीवादी मान्यताओं को यह किताब दुत्कारती है। इसमें बेटियों की ज़िंदगी में नाइंसाफी खत्म करने



36. एक मधुमक्खी और एक गुलाब

पीटर डीरोज़ा

उसका कोई नाम नहीं था, सिर्फ एक नम्बर था 15/753। वो एक गुलाम मधुमक्खी था। छत्ते के कठोर कानूनों के कारण उसे गुलामी ही अच्छी लगने लगी थी। परंतु एक दिन उसकी भेंट रोजा नाम के गुलाब से हो जाती है। उसके दिमाग में क्रांतिकारी विचार पैदा होते हैं और वो अपनी मुक्ति के लिए कदम उठाता है। मानवीय बंधनों के बावजूद मुक्ति की ललक हर इंसान में मौजूद होती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

37. वफ़ादार हाथी

युक्तियो शुचियो

युद्ध न केवल देशों और लोगों को तबाह करता है, वरन जानवरों पर भी कहर बरपाता है। ये सच्ची कहानी है टोक्यो में स्थित 'यूनो' चिड़ियाघर की जहाँ पर द्वितीय महायुद्ध के दौरान, तीन हाथियों को भूख और प्यास से तड़पा-तड़पा कर मार दिया गया। आएँ, हमलोग एक ऐसी दुनिया बनाएँ जिसमें जंग न हो और लोग और जानवर अमन और चैन से जी सकें।

सहयोग राशि : 10 रुपये



38. फूलों की उम्मीद

दिना पौलोस

आज हरेक कोई भाग-दौड़ में लगा है। कोई पैसे कमाने की होड़ में है तो कोई सत्ता की होड़ में। किसी को दूसरे की फिक्र नहीं है। लोग एक-दूसरे को रौंदते, कुचलते हुए सफलता की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं। परंतु सीढ़ी पर ऊपर क्या है? कुछ है भी या नहीं? लोग इसलिए सीढ़ी चढ़ रहे हैं क्योंकि बाकी सभी लोग सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं। यह कहानी ज़िंदगी के बुनियादी सवालों पर प्रकाश डालती है। इस छोटी-सी कहानी में आपकी ज़िंदगी को बदलने की ताकत है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

39. जौनाथन लिविंग्स्टन सीगल

रिचर्ड बाख़

हम अपने विचारों के बंधनों में जकड़े रहते हैं और कभी भी अपनी असली सुंदरता और प्रतिभा को नहीं पहचान पाते। दुनिया की सबसे प्रेरक पुस्तकों में, इस पुस्तक का अपना अनूठा स्थान है। 25 साल पहले छपी इस नायाब पुस्तक का दुनिया की सैकड़ों भाषाओं में अनुवाद हुआ। हिंदी में इसका यह पहला संस्करण है। सभी साहित्य प्रेमियों के लिए यह पुस्तक पढ़ना अनिवार्य है।

सहयोग राशि : 12 रुपये



40. शिन की तिपहिया साइकिल

टाटसुहारु कोडामा

बच्चों के दिलों में, हमेशा के लिए युद्ध और लड़ाई के प्रति नफरत पैदा करेगी। लड़ाई में बड़े-बड़े नेता और फौज के जनरल नहीं मरते हैं। उसमें मरते हैं शिन जैसे तीन वर्ष के निरीह बच्चे। शिन तिपहिया साइकिल चला रहा था जब हिरोशिमा पर अमेरिका ने एटम बम फेंका। ये कहानी हमें हमेशा युद्ध के विनाश की याद दिलाएगी।

सहयोग राशि : 10 रुपये



41. हिरोशिमा की आग

तोशी मारुकी

ये एक सच्ची और दिल दहलाने वाली कथा है। हिरोशिमा पर गिरे एटम बम ने बेहद तबाही मचाई। पचास साल बीत चुके हैं परंतु उसकी घातक किरणों से आज भी लोग मर रहे हैं। इस कहानी को पढ़कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। इस सशक्त कहानी को पढ़कर तमाम लोग, युद्ध से अपना नाता तोड़ेंगे और अमन-चैन तथा शांति के कामों में हाथ बंटाएंगे।

सहयोग राशि : 12 रुपये



42. चूहे और चूहे

जे.बी.एस. हैल्डेन

विश्व विख्यात ब्रिटिश जीवशास्त्री हैल्डेन ने अपने जीवन के अंतिम दस साल भारत में बिताए। उनका देहांत भुवनेश्वर में हुआ। उन्होंने अपने जीवन में बच्चों के लिए एक अमर पुस्तक लिखी - 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' जो 1928 में छपी। इसी पुस्तक की एक अद्भुत कहानी है 'चूहे और चूहे'। इसे आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



43. जिसने उम्मीद के बीज बोये

ज्याँ गिओनो

दुनिया की सबसे मशहूर ग्रीन क्लासिक। एक अनपढ़ गडेरिए की कहानी जो अपनी लगन से एक बियाबान इलाके में बीज बो कर एक पूरी पथरीली पहाड़ी को हरा-भरा कर देता है। इस जादुई किताब को पढ़कर असंख्यों लोगों ने पेड़ लगाए हैं। दुनिया की महान प्रेरणास्पद पुस्तकों में अनूठी। किसी भी संवेदनशील इंसान के लिए इस पुस्तक को पढ़ना अनिवार्य है।

सहयोग राशि : 12 रुपये



44. कूकू और भूरी

लीसा अर्नेस्ट

दो झगड़ालू मुर्गियों की कहानी जिसका फायदा एक कुत्ता उठाता है। कुत्ता उनके सभी अंडे खा जाता है। अंत में केवल एक ही अंडा बचता है। कूकू और भूरी अपने इकलौते चूजे को बड़े प्यार से पालती-पोसती हैं। नये युग की नई कथा।

सहयोग राशि : 10 रुपये



45. खुशहाल बच्चे

शोभा भागवत

पुणे के बालभवन में पिछले 20 वर्षों से बच्चों के बीच काम करने के सकारात्मक अनुभव का ब्यौरा। बच्चों के साथ की गई अनेकों गतिविधियों का वर्णन। खेलना और हम उम्र बच्चों की संगति, बच्चों के लिए क्यों आवश्यक है? किस प्रकार गली-मुहल्लों में बच्चों के खेलने की व्यवस्था की जा सकती है? शिक्षा और बच्चों में रुचि रखने वाले हरेक व्यक्ति के लिए अनिवार्य पुस्तक।

सहयोग राशि : 12 रुपये



46. अंडे से चूज़ा

मिलसेंट सेल्सेम

अंडों में से चूजे निकलते हैं, यह तो हरेक किसी को पता है। इस पुस्तक में अंडे से चूज़ा बनने के विकास की क्रमबद्ध कहानी को चित्रों में दर्शाया गया है। अंडे के अंदर 21 दिनों तक हो रहे परिवर्तनों का सिलसिलेवार चित्रात्मक ब्यौरा है। जन्म से पहले मछली, चूजे और मनुष्य के भ्रूण देखने में लगभग एक जैसे लगते हैं, परंतु बड़े होकर वे एकदम भिन्न हो जाते हैं। विज्ञान की इस रोचक पुस्तक में आपको बेहद मजा आएगा।

सहयोग राशि : 12 रुपये



47. रिमझिम करती बारिश आई

एक अफ्रीकी लोककथा

एक अफ्रीकी लोककथा का छंदों में रूपांतरण। एक बार अफ्रीका के जंगलों में भयानक सूखा पड़ता है। घास सूख जाती है। मवेशी मरने लगते हैं। सभी ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। तब वीर किपाट एक तीर चलाकर काले-काले बादलों में छेद करता है और उनसे रिमझिम करती हुई बारिश आती है, जिससे घास हरी-भरी हो जाती है और खुशहाली छा जाती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये





48. कूड़ा-कचरा लौरी बेकर

आज की उपभोक्ता संस्कृति का एक ही नारा है 'खरीदो और फेंको'। इससे एक ओर कचरे और मलबे के ढेर बढ़ रहे हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण में जहर घुल रहा है। हम चाहें तो इस स्थिति से निबट सकते हैं। परंतु इसकी शुरूआत हमें स्वयं करनी होगी- खुद अपने घर से।

सहयोग राशि : 10 रुपये

49. फरडीनैंड की कहानी

मनरो लीफ

फरडीनैंड एक बैल है। लड़ाई-झगड़ा उसे एकदम नापसंद है। उसे शांति प्रिय है। लड़ाई के मैदान में सिपाही उससे लड़ने के लिए भाले और तलवारें तानें हैं। परंतु फरडीनैंड लड़ता नहीं है। वो मैदान के बीच बैठकर औरतों के बालों में लगे फूलों की खुशबू सूंघता है। अंत में उसे घर वापिस भेज दिया जाता है। 1936 में लिखी इस क्लासिक पुस्तक में शांति का एक गहरा संदेश छिपा है।

सहयोग राशि : 12 रुपये



50. जौनी एपिलसीड की कहानी अलीकी

जौन चैपमैन ने 225 साल पहले अमरीका के कोने-कोने में लाखों सेब के पेड़ लगाए। लोग प्यार से उन्हें जौनी एपिलसीड के नाम से बुलाने लगे। उनका पेड़ लगाने का मुहिम सारी दुनिया के प्रकृति-प्रेमियों को हमेशा प्रेरित तथा उत्साहित करेगा।

सहयोग राशि : 10 रुपये

51. संयुक्त राष्ट्र के तीन वादे

मनरो लीफ

संयुक्त राष्ट्र क्यों, कब और कैसे बना? चित्रों से भरी बेहद रोचक कहानी। संयुक्त राष्ट्र ने दुनिया के लोगों से तीन वादे किए थे - 1. युद्ध बंदी। 2. सभी इंसानों के साथ सम्मानजनक व्यवहार। 3. जानकारी को सबके साथ बांटकर सभी का जीवन-स्तर बेहतर बनाना। इन तीनों वादों को पूरा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र आज भी दिन-रात काम कर रहा है।

सहयोग राशि : 12 रुपये



52. बिनी के जानवर मिलसैंट सेल्सैम

चीजों को अलग-अलग समूहों में बांटना विज्ञान की एक महत्वपूर्ण कुशलता है। इस पुस्तक में जिज्ञासु बिनी अपनी अटकलें लगाकर विभिन्न प्रकार के जानवरों को अलग-अलग गुटों में बांटता है। इसमें म्यूजियम के प्रोफेसर वुड उसकी मदद करते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

की कोशिश की गई है। कोशिश है कि लड़के-लड़कियां, औरत-मर्द बराबरी के माहौल में मिल-जुलकर आगे बढ़ें और एक नए समाज की संरचना करें।

सहयोग राशि : 12 रुपये

77. जादुई बीज

मिस्सुमासा ऐनो

यह कहानी जैक नाम के एक मस्तमौला इंसान की है। एक जादूगर उसे दो जादुई बीज देता है। जैक एक को खाता है और फिर उसे साल भर



54. पढ़ने का मज़ा

मनरो लीफ

पेट के लिए खाना जरूरी है तो दिमाग के लिए पढ़ना। इसलिए पढ़ना सीखो और किताबों से दोस्ती बनाओ। किताबें तुम्हारी ज़िंदगी को खुशी और उमंग से भर देंगी। किताबों में तुम एलिस के साथ, अजूबे लोक की सैर कर सकते हो, और राबिनहुड के साथ दूर-दराज के देशों में घूम सकते हो।

सहयोग राशि : 10 रुपये



55. विज्ञान का मज़ा

मनरो लीफ

रटने से बच्चे ऊब जाते हैं। विज्ञान का मज़ा है प्रयोग करने में। खुद के लिए नायाब खिलौने बनाने में। विज्ञान के लिए मंहगे उपकरण की जरूरत नहीं होती। बच्चों के लिए पूरी दुनिया ही एक बड़ी प्रयोगशाला है। हम फेंकी हुई चीजों से रोचक विज्ञान के प्रयोग कर सकते हैं। आज के युग में विज्ञान को जानना और समझना बेहद जरूरी है। विज्ञान के बिना ज़िंदगी अधूरी है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



56. प्राचीन और नवीन

मनरो लीफ

सैकड़ों-हजारों साल पहले लोग गुफाओं में रहते थे। उन्हें खाने को बहुत कम मिलता था। लोग कम-उम्र में ही बीमारियों से मर जाते थे। आज विज्ञान की तरक्की ने हमारे जीवन को सुखी और खुशहाल बनाया है। आज हमें तमाम साधन-सुविधाएं उपलब्ध हैं। पुराने ज़माने में लोग उनके बारे में सोच भी नहीं सकते थे। प्राचीन और नवीन की कहानी इसी सच को उजागर करती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



57. पांच चीनी भाई

क्लैर हचिट बिशप

पांच चीनी भाई देखने में बिल्कुल एक समान थे। एक भाई को मौत की सज़ा सुनाई जाती है। एक भाई, दूसरे की जगह ले लेता है। किसी को भी उस पर शक नहीं होता है। हर भाई में एक विशेष गुण होता है। इस तरह निर्दोष भाई बच जाते हैं और बाकी जीवन अपनी मां के साथ खुशी-खुशी बिताते हैं। एक सदाबहार कहानी जो बच्चों को बेहद पसंद आएगी।

सहयोग राशि : 10 रुपये



58. पृथ्वी के रहस्य

आईका सुबोटा

इस मार्मिक किताब में, बारह साल की जापानी लड़की आईका, दुनिया के बिगड़ते पर्यावरण की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करती है। वो चाहती है कि सभी लोग फिज़ूलखर्ची कम करें और अपनी ज़रूरतों पर लगाम लगाएं जिससे कि दुनिया में कचरे और मलबे के ढेर कम हों।

सहयोग राशि : 12 रुपये



59. मददगार हाथ

सुज़ाना हैल्डेन

नदी में छलांग लगाते हुए ग्रेग का सिर पत्थर से टकराया। जिससे उसके हाथ-पैर पूरी तरह से चलना बंद हो गए। ग्रेग अब व्हील-चेयर पर अपनी ज़िंदगी गुज़ारेगा। उसकी मदद करती है विली नाम की एक मादा कापूचिन बंदर। वो ग्रेग को खाना-पानी देती है, उसकी पीठ खुज़लाती है और उसके अनेकों अन्य काम करती है। ग्रेग पूरी तरह से विली पर निर्भर है। 'हैलिंग हैंड्स' नामक संस्था ग्रेग जैसे विकलांग लोगों की मदद के लिए विशेष बंदरों को ट्रेनिंग देती है। यह एक सच्ची और मार्मिक कहानी है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



60. मेरी बहन सुन नहीं सकती

जीन वाईटहाउस पीटरसन

यह कहानी एक छोटी लड़की की है। वह बचपन से ही बहरी है - यानि बहुत कम सुन पाती है। वो कई काम कर पाती है, परंतु कुछ चीज़ें उससे नहीं होती हैं। वो फोन की आवाज़ नहीं सुन सकती है, परंतु भयंकर तूफान में भी वो गहरी नींद सोती है। बहरे लोगों के कान तो नहीं दुखते हैं। अगर कोई उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाए तो उन्हें अवश्य दुख होता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



61. नीलबाग के डेविड

एस. आनंदलक्ष्मी, रोज़लिन विल्सन

ज़्यादातर स्कूल बच्चों के लिए एक कच्ची जेल होते हैं। परंतु डेविड का नीलबाग स्कूल कुछ अलग ही था। अपने देश में, गांव के बच्चों को, विश्व-स्तर की उम्दा और क्वालिटी शिक्षा देने का नीलबाग अपने जैसा एक अनूठा प्रयास था। स्कूल जाएं या न जाएं, इस बात का निर्णय नीलबाग में बच्चे खुद ही लेते थे। बच्चों को अपनी मनमर्जी के विषय चुनने का अधिकार था। बच्चे खुद की क्षमता और गति के अनुसार चीज़ों को सीख सकते थे। नीलबाग में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चे मिट्टी, लकड़ी और तमाम हस्तकलाएं और कुशलताएं सीखते। नीलबाग का प्रयोग, डेविड ऑसबरो की, लीक से हटी ज़िंदगी की कहानी जैसा ही है।

सहयोग राशि : 12 रुपये

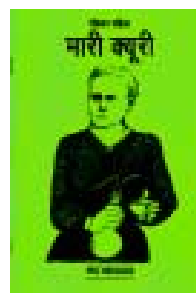


62. मारी क्यूरी

गीता बंदोपाध्याय

मादाम क्यूरी एक चर्चित तथा विश्वविख्यात नाम है। मादाम क्यूरी एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने अनेकों रुकावटों को लांघकर विश्व में एक सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक के रूप में अपने को स्थापित किया और दिखाया कि 'वैज्ञानिक' फ्रेम में भी एक प्यारा-सा हंसता हुआ भोला चेहरा भी अच्छी तरह फिट होता है। उन्हें दो बार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सहयोग राशि : 12 रुपये



63. शैतान चूहे

जॉन योमैन

यह एक दिलचस्प कहानी है। शैतान चूहे, कंजूस आटा चक्की के मालिक को चकमा देने में सफल होते हैं। चूहे अपनी सूझ-बूझ से एक चितकबरी बिल्ली की जान बचाते हैं। बाद में बिल्ली, चूहों की दुश्मन की बजाए, उनकी आजीवन दोस्त बन जाती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये





64. पत्तों का चिड़ियाघर

अरविन्द गुप्ता

पेड़ों के पत्तों को इकट्ठा करके, उनको कागज़ पर चिपकाकर अनेकों जानवर बनाना संभव है। कोई पत्ता पांव बनेगा तो कोई पेट। इस बिना लागत की कला से बच्चों की सृजनशीलता में चार चांद लगेंगे।

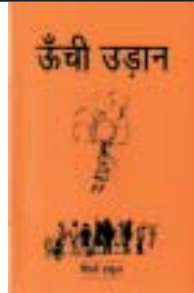
सहयोग राशि : 10 रुपये

65. ऊँची उड़ान

शिल्ले ह्यूज़

एक जिज्ञासु, नहीं बच्ची की अनूठी कथा। इसमें कल्पनाशीलता, विज्ञान, रोमांच के साथ-साथ बालमन का अद्भुत चित्रण है। दुनिया की यह महान चित्रकथा आपका मन मोह लेगी। इसके आकर्षक चित्रों को आप बार-बार देखना चाहेंगे।

सहयोग राशि : 12 रुपये



66. चलें, कुछ अच्छा करें

मनरो लीफ



पुरानी गुफाओं से आजकी ऊँची अट्टालिकाओं तक हमने काफी प्रगति की है। अनाज की पैदावार बढ़ी है, लोगों की सेहत बेहतर हुई है, और खुशहाली बढ़ी है। लेकिन हमने अपना लालच और स्वार्थ अभी तक नहीं छोड़ा है। आज दुनिया के आधे से ज्यादा वैज्ञानिक हथियार और बम बनाने के काम में लगे हैं। दुनिया तीसरे महायुद्ध की कगार पर खड़ी है। दुनिया के सभी नेक और भले लोगों को इस जंग से बचने के लिए मिल-जुलकर शांति के लिए काम करना पड़ेगा।

सहयोग राशि : 12 रुपये

67. आखिरी फूल

जेम्स शर्वर

दुनिया में ज्यादातर लोग शांति और प्रेम से जीना चाहते हैं। लोग एक-दूसरे को चाहते हैं और प्रकृति से प्रेम करते हैं। परंतु कुछ ताकतें उन्हें हमेशा जंग की आग में झोंकती हैं। इस पुस्तक में दूसरे या तीसरे नहीं, बल्कि बारहवें विश्वयुद्ध की कल्पना की गई है। यह पुस्तक धर्म और युद्ध के ठेकेदारों के मुंह पर एक करारा तमाचा है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



68. क्या तुम मेरी मां हो?

पी. डी. ईस्टमैन

बच्चों की सदाबहार क्लासिक। चिड़िया का एक छोटा बच्चा अपने घोंसले से गिर जाता है। फिर वो अपनी मां को खोजने निकलता है। रास्ते में उसे अनेकों रोचक अनुभव होते हैं। अंत में जब वो वापिस घोंसले में पहुंचता है तो वहां मां उसका इंतज़ार कर रही होती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

69. एक था चूहा

मर्सिया ब्राउन

“अगर किसी ने मुझसे यह कहने की ज़रूरत की, कि मैं पहले चूहा था तो मैं उसे मार डालूंगा!” चीते में बदले जाने के बाद चूहा बहुत घमंडी हो जाता है। यह देख जादू-टोना जानने वाले बूढ़े साधु ने चीते को फिर से चूहे में बदल दिया। क्योंकि उसी साधु ने उस छोटे चूहे को पहले बिल्ली, फिर कुत्ते और फिर एक घमंडी चीते में बदला था।

सहयोग राशि : 10 रुपये



70. हेलन केलर की आत्मकथा

हेलन केलर



हेलन केलर ने बीमारी से बचपन में ही अपनी आंखों की रोशनी और सुनने की क्षमता खो दी थी। अपनी शिक्षिका ऐन सुलीवन के अथक प्रयासों के द्वारा उन्होंने पढ़ना-लिखना और बोलना सीखा। बाद में वे विश्वविख्यात हुईं। हेलन केलर की आत्मकथा हर मनुष्य के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। इस विलक्षण महिला और उसकी अद्वितीय टीचर को लोग हमेशा याद रखेंगे। उनके जीवन की इस कहानी में हरेक इंसान के लिए एक सबक है— अगर मनुष्य चाहे तो बड़ी-से-बड़ी बाधा पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। यह कॉमिक पुस्तिका बच्चों और बड़ों सभी को पसंद आएगी।

सहयोग राशि : 12 रुपये

71. सच्चे बच्चे, अच्छे बच्चे

फड क्वो-ल्याङ

ये चित्रकथाएं एक छपाई-मजदूर की रचनाएं हैं जिनमें चीनी बच्चों के दैनिक जीवन की मनमोहक तस्वीरें खींची गई हैं। इन चित्रों में यह दर्शाया गया है कि चीन में बच्चे किस तरह एक-दूसरे की मदद करने को तत्पर रहते हैं और किस तरह वो समूह से प्यार करते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये





72. सचित्र कहानियां

निकोलाई रादलोव

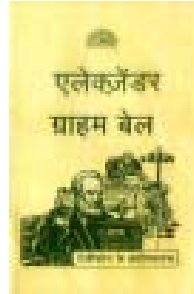
इस बाल केंद्रित पुस्तक की सचित्र कहानियां बच्चों के लिए आनंद और आश्चर्य से भरी हैं। इन कहानियों में बच्चों को कुछ पढ़ाने या सिखाने की कोशिश नहीं की गई है। न ही इनमें ऊपर से आदर्श थोपे गए हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

73. एलेक्जेंडर ग्राहम बेल

आज दुनिया में टेलीफोनों का जाल बिछा है। सूचना क्रांति में टेलीफोनों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। महानगरों से लेकर छोटे-छोटे गांवों और कस्बों तक में पीसीओ बूथ खुले हैं जहां कोई भी आम इंसान जाकर टेलीफोन का इस्तेमाल कर सकता है। एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने आज से लगभग 120 वर्ष पहले टेलीफोन का आविष्कार किया था। इस कॉमिक पुस्तक के माध्यम से बच्चे टेलीफोन के आविष्कार की कहानी को बड़ी सरलता से समझ सकते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये



74. बोलते पत्थर

अबुलफज्ज हिम्माती-ए अहूई

पत्थर वाकई में बोलते हैं। आप नदी के किनारे से छोटे और चिकने पत्थर जमा करके उनसे बेहद सुंदर पक्षी और जानवर बना सकते हैं। पत्थरों को आपस में चिपका कर और रंग करके अनेकों पक्षियों और प्राणियों के मॉडल बनाना संभव है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



75. इठलाती गुठली

मरियम रहमाती इवनि

फल खाने के बाद हम अक्सर उनके बीज और गुठली फेंक देते हैं। पर उन बीजों से अनेकों कलाकृतियां बनाना संभव है। बीजों को आपस में चिपका कर आप भिन्न-भिन्न जानवरों की आकृतियां बना सकते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये



76. लाल गुब्बारा

एल्बर्ट लैमोरिस

दिल को छू लेने वाली एक मार्मिक कहानी। एक संवेदनशील लड़के और उसके प्रिय लाल गुब्बारे की अमर दोस्ती की दास्तां। परंतु यह दोस्ती कुछ बदमाश लड़कों को पसंद नहीं आती। बाद में क्या होता है... जानने के लिए आगे पढ़ें। इस कहानी पर आधारित एक सुंदर फिल्म भी बनी है।

सहयोग राशि : 12 रुपये

भूख नहीं लगती। दूसरे बीज को वो बो देता है। अगले साल फिर दो बीज पैदा होते हैं। जैक एक को खाता है और दूसरे को बोता है। एक बार जैक दोनों बीजों को एक-साथ बो देता है। यहीं से असली कहानी शुरू होती है। गणित कहानी को आगे बढ़ाती है या कहानी गणित को, इसका निर्णय आप खुद करें। दुनिया की एक महान कृति।

सहयोग राशि : 12 रुपये



78. व्हील-चेयर ही मेरे पैर हैं

ऐंग्रेट रिट्जर फ्रैंज़-जोसेफ हवैंग

मारगिट एक छोटी सी लड़की है। वो चलने में असमर्थ है। व्हील-चेयर ही उसके पैर हैं। उसके दिल में ज़िंदगी जीने की उमंग है। वो सुपर मार्केट जाती है, जहां उसे कई खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। वो चाहती है कि लोग उस पर तरस न खाएं और उसके साथ अन्य बच्चों जैसा ही व्यवहार करें। अंत में उसे एक दोस्त मिलता है जिसके साथ खेलकर उसे बेहद खुशी मिलती है।

सहयोग राशि : 40 रुपये



79. खतरा : स्कूल!

रूपांतरकार- विनोद रायना

स्कूली व्यवस्था को बेनकाब करने वाली दुनिया की सबसे सशक्त पुस्तक। ब्राजील के मशहूर राजनैतिक कार्टूनिस्ट क्लौडियस के तीखे कार्टून। हर माँ-बाप के पढ़ने योग्य, कम-से-कम ये जानने के लिए कि स्कूल उनके बच्चों के साथ किस प्रकार का सलूक करते हैं।

सहयोग राशि : 50 रुपये



80. नन्हा राजकुमार

सैंतेक्जूपेरी



नन्हा राजकुमार का लेखक सैंतेक्जूपेरी एक पायलट था। कहानी भी एक पायलट की है। पायलट की भेंट रेगिस्तान में एक नन्हें राजकुमार से होती है। पायलट अपना रास्ता भटक गया है - मौत उसके सामने खड़ी है। लेखक ने जब यह उपन्यास लिखा तब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था।

पिछले पचास से भी अधिक वर्षों में इस उपन्यास को विश्व के करोड़ों बच्चों व बड़ों ने अनेक भाषाओं में पढ़ा है। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसमें चित्र भी लेखक ने ही बनाए हैं। चित्रों के लिए हम पिकोलो प्रकाशन के आभारी हैं।

सहयोग राशि : 40 रुपये

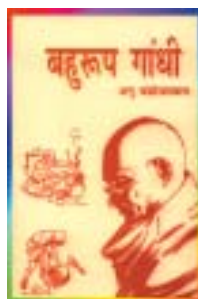
अनु बंदोपाध्याय द्वारा रचित पुस्तक **बहुरूप गांधी** एक नायाब कृति है। गांधीजी के ऊपर शायद बच्चों के लिये ऐसी पुस्तक पहले कभी नहीं लिखी गयी। इस पुस्तक की कल्पना एकदम निराली है। 1964 में जवाहरलाल नेहरू ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा : 'गांधीजी की कितनी अलग-अलग चीजों में रुचि थी, यह देखकर ही ताज्जुब होता है। और जब वो किसी काम में रुचि लेते थे तो वो उसे पूरी निष्ठा से करते थे। वो कभी भी किसी काम को सतही रूप से नहीं करते थे। खासकर वो ज़िंदगी की छोटी-छोटी चीजों को पूरी लगन से करते थे। यह उनकी गहरी इंसानियत का द्योतक था। यही उनके चरित्र का आधार था।' पुस्तक में 28 अध्याय हैं। हरेक अध्याय साधारण चीजों के प्रति इस असाधारण व्यक्ति का नज़रिया दर्शाता है। कुछ अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं : मजदूर, वकील, दर्जी, धोबी, नाई, मेहतर, चमार, नौकर, रसोइया, डाक्टर, नर्स, टीचर, बुनकर, कतैया, बनिया, किसान, भिखारी, कैदी, जनरल, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, फैशन-डिजायनर, सपेरा आदि। इस पुस्तक में गांधीजी के कुछ अनूठे चित्र भी हैं। कुछ चित्रों को प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण ने बनाया है, बाकी को निकी थॉमस ने।

सहयोग राशि : 65 रुपये

81.

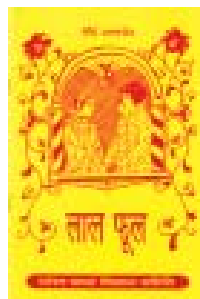
बहुरूप गांधी

अनु बंदोपाध्याय



82. लाल फूल

सेर्गेई अक्साकोव



सात समुन्दर, पर्वतों, नदियों के पार दूर देश के सौदागर और उसकी तीन बेटियाँ की कहानी। बेटियों के चाहने पर सौदागर उनको मनचाही चीजें लाकर देता है, पर छोटी बेटी की चाहत थी दुनिया में बेजोड़ लाल फूल। वह आखिर में ऐसा लाल फूल ले तो आता है, मगर उस फूल की वजह से छोटी बेटी एक जादू की दुनिया में चली जाती है। वहां क्या होता है, पढ़ो इस सुन्दर किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

83. अपरिचितों के बीच

निकोलाई नोसोव



उड़न गुब्बारे से नीचे ज़मीन में पहुँचकर नजानू ने अपने को एक अनजान मगर सुन्दर मकान में पाया। वहाँ उसकी दोस्ती दो छुटकियों से हो गयी। फिर एक चश्में वाली छुटकी ने आकर नजानू का मुआयना शुरू किया, तब उसे पता चला कि वह एक अस्पताल पहुँच गया है। आगे क्या हुआ...?

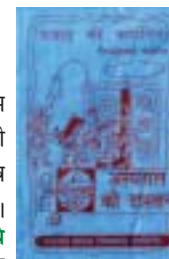
सहयोग राशि : 10 रुपये

84. अस्पताल की दास्तान

निकोलाई नोसोव

नजानू छुटकियों के साथ अस्पताल पहुँचा तो उसे पता चला कि उसके तमाम छुटके दोस्त वहाँ भरती थे। अस्पताल की छुटकी डॉक्टर बहुत सख्त मिज़ाज की थी और किसी को मिलने देने से भी मना कर रही थी। नजानू ने कैसी तरकीब लगायी कि डॉक्टर सबको अस्पताल से छुट्टी देना मान गयी, पढ़ो इस कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



85. नजानू चित्रकार कैसे बना

निकोलाई नोसोव

एक दिन नजानू को चित्रकारी का शौक हुआ और उसने अपने दोस्त ट्यूबेश से रंग और ब्रुश लिये। एक-एक करके नजानू ने अपने सब दोस्तों के चित्र बनाये। मगर हर चित्र में कुछ न कुछ अजीब था, किसी में कान गधे जैसे थे...। जब नजानू के दोस्तों ने अपना-अपना चित्र देखा तब क्या हुआ ...?

सहयोग राशि : 10 रुपये

86. नगर की सैर

निकोलाई नोसोव

नजानू के छुटकियों के नगर में सैर की। सड़कों पर कालीन बिछे थे, सरकण्डों की पाइपों से घर-घर में पानी पहुँचाया जाता था, हर जगह सब्जियों और फलों के पेड़ थे। मगर छुटके नगर से दूर नदी के किनारे अलग रहते थे। ऐसा क्यों? पढ़ो इस कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



87. साबुन पानी ज़िन्दाबाद!

कोर्नेई चुकोव्स्की



एक नटखट बालक शैतानियों में खोया रहता था, न हाथ-मुँह धोता, न नहाता। एक दिन उसके तकिये, जूते, किताबें, खिलौने उससे दूर भागने लगे, और चिलमची साबुन, ब्रुश, उसे पकड़कर दौड़े आये। फिर एक दोस्त मगरमच्छ ने उसे कैसे बचाया और सबसे कैसे दोस्ती करवायी, यह मज़ेदार कहानी इस किताब में है, एक कविता की शकल में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

नव जनवाचन बाल पुस्तकमाला



1. बसरा की लाइब्रेरियन जेनिट विंटर

यह एक सच्ची कहानी है। इराक में हाल की जंग में न केवल लोग मरे, बल्कि एक प्राचीन सभ्यता भी तबाह हुई। घमासान युद्ध के बीच एक जिंदादिल महिला लाइब्रेरियन ने बसरा की लाइब्रेरी को कैसे बचाया, इसकी बेमिसाल कहानी है यह।

सहयोग राशि : 15 रुपये

2. कितना बड़ा होता है फुट?

लेखक और चित्रकार : रॉल्फ मॉइलर

पुराने जमाने में लोग हाथ के बीते, डग की दूरी आदि से लंबाई नापते थे। पर अक्सर भिन्न-भिन्न लोगों के बीतों की माप भी अलग-अलग होती थी। इससे नापने में गड़बड़ होती थी और झगड़े-फसाद होते थे। 'मानक' लंबाई की ईजाद कैसे हुई, इस प्रश्न का जवाब इस रोचक कहानी में छिपा है।

सहयोग राशि : 18 रुपये

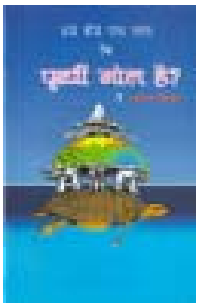


3. हमें कैसे पता चला कि पृथ्वी गोल है?

आइजिक एसिमोव

सैकड़ों सालों तक लोग पृथ्वी को चपाती जैसा चपटा समझते रहे। यूनानी दार्शनिकों ने 2500 वर्ष पहले पृथ्वी को गोल करार दिया। उनका मत सच निकला। उन्होंने किस आधार पर पृथ्वी को गोल बताया? सुप्रसिद्ध विज्ञान लेखक आइजिक एसिमोव यहां इस रोचक प्रश्न की गुत्थी को सुलझाते हैं।

सहयोग राशि : 25 रुपये



4. गुल्लू गुड़िया के नन्हे गगन में के.के. कृष्णकुमार

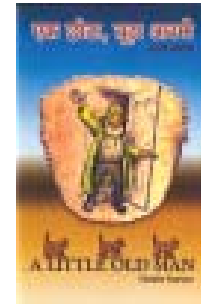
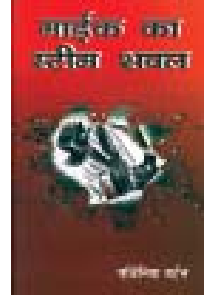
एक सुन्दर प्यारी तितली नानी-फूल की गोद में बैठी थी। मुन्नी गुड़िया ने उसे पकड़ने की कोशिश की। तभी उसे छींक आ गई। छींक की आवाज सुनकर तितली उड़ गई और बादलों के बीच पहुंच गई।... वहां मुर्गा-बादल, शेरनी-बादल, बकरी-बादल... खूब सारे बादलों के बीच घोर लड़ाई छिड़ गई। फिर क्या हुआ, तितली का क्या हुआ, पूरा किस्सा पढ़िए इस कविता में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

5. माईक का स्टीम शवल वर्जिनिया बर्टन

माईक स्टीम से चलने वाला फावड़ा चलाता है। पर डीजल के फावड़ों के आ जाने से माईक का धंधा बंद होने की कगार पर है। बड़ी मुश्किल से उसे एक ठेका मिलता है। माईक को सिर्फ एक दिन में नए टॉउन-हाल की नींव खोदनी है। देरी होने पर उसे कुछ भी मेहनताना नहीं मिलेगा। क्या उसका पुराना फावड़ा यह काम कर पाएगा? भविष्य में माईक रोजी-रोटी के लिए क्या करेगा? आगे का हाल जानने के लिए बाल साहित्य की इस अत्यंत रोमांचक 'क्लासिक' को अवश्य पढ़ें।

सहयोग राशि : 20 रुपये



6. एक छोटा, बूढ़ा आदमी

नटाली नॉर्टन

एक बूढ़ा आदमी एकदम अकेले एक टापू पर रहता था। उसे वहां का अकेलापन खलता था। एक दिन भयानक तूफान में बूढ़े का घर बह गया। लेकिन तभी अचानक कुछ ऐसा हुआ जिससे बूढ़े को न केवल नया घर मिला, बल्कि उसकी उदासी भी दूर हुई।

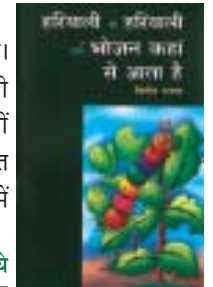
सहयोग राशि : 25 रुपये

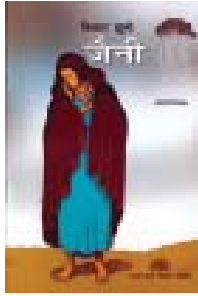
7. हरियाली ही हरियाली उर्फ भोजन कहाँ से आता है

विनोद रायना

हरियाली सिर्फ सुंदरता की ही चीज नहीं। यह हमारे भोजन का जरूरी हिस्सा है। संसार के सभी प्राणी चाहे वे शाकाहारी हों या मांसाहारी, सबका जीवन किसी न किसी रूप में इस हरियाली से जुड़ा हुआ है। जो प्राणी सीधे हरियाली नहीं खाते उनका भी जीवन भोजनश्रृंखला में कहीं न कहीं उन जीवों पर आधारित है जो हरियाली को खाते हैं। मगर यह हरियाली खुद है क्या?— इस बारे में वैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराती है यह पुस्तिका।

सहयोग राशि : 10 रुपये





8. जैनी

विक्टर ह्यूगो

यह एक मल्लुआरे परिवार की मन को छूने वाली करुणा भरी संघर्ष-गाथा है। इसकी नायिका जैनी का परिवार भयंकर गरीब है। उसके छोटे-छोटे पांच बच्चे हैं। मुश्किल से गुजारा होता है। तभी जैनी के ऊपर दो और नन्हे अनाथ बच्चों का सवाल उठ खड़ा होता है। अब गरीब जैनी क्या करेगी? उसकी मजबूरी बड़ी है या उन दो नन्हों का जीवन?

सहयोग राशि : 10 रुपये

9. बिल्ली के बच्चे

चेखोव

यह कहानी बच्चों की निर्दोष और कोमल दुनिया की सैर कराती है। समाज और प्रकृति की जटिलता को बच्चे क्या समझें? छोटे-छोटे बच्चे 'वान्या' और 'निना' को बिल्ली के नवजात बच्चों से सहज लगाव हो गया था। वे उन अनाथ बच्चों का घर-संसार बसाना चाहते थे ... लेकिन उनकी दुनिया और बड़ों की दुनिया में कितना अंतर है, यह मार्मिक कहानी दर्शाती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



10. लाल केला

सी.एन. अन्नादुरै

लाल केले के पौधे की परवरिश करते हुए सैंगोटन का पूरा परिवार खुश था कि उसके फल पर उनका हक होगा, किसी और का नहीं। जैसे-जैसे केले का पौधा बढ़ रहा था, वैसे-वैसे उनके सपने भी पंख लगाकर उड़ान भर रहे थे। लेकिन जैसे ही फल पककर तैयार हुआ कि ... सैंगोटन के परिवार के सपनों का क्या हुआ? यह सब पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



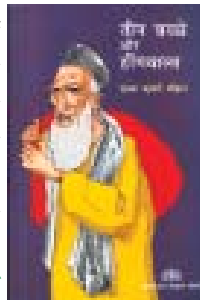
11. तीन बच्चे और हींगवाला

सुभद्रा कुमारी चौहान

इस संग्रह में दो कहानियाँ हैं— 1. तीन बच्चे, और 2. हींगवाला। दोनों कहानियाँ बच्चों और उनकी माँओं के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं। पहली कहानी में पढ़ें कि माँ से बिछुड़े असहाय बच्चे दर-दर की ठोकरें खाते आखिर कैसे अंत तक पहुँचते हैं। दूसरी कहानी में पढ़ें कि दंगों के बीच फंसे बच्चे और उनकी चिंता में घुलती माँ की मदद के लिए आखिरकार कौन आता है।

दुखांत और सुखांत के परस्पर दो ध्रुवों पर स्थित ये कहानियाँ दिल को सहज ही छू लेती हैं।

सहयोग राशि : 15 रुपये



12. नन्हा भगोड़ा खरगोश

मार्गरेट वाईज ब्राउन

माँ की ममता की एक बेजोड़ कहानी। जब खरगोश का बच्चा घर छोड़ने की धमकी देता है तो माँ आखिरी दम तक अपने बेटे का पीछा करती है। नदी लांघकर, पहाड़ चढ़कर वह अपने बच्चे को वापस लाती है और गले लगाती है।

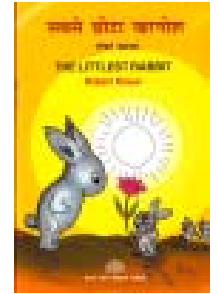
सहयोग राशि : 25 रुपये

13. सबसे छोटा खरगोश

रॉबर्ट क्राउस

छोटा खरगोश वाकई बहुत नन्हा था। सब लोग उसे चिढ़ाते, उसका मजाक उड़ाते और उस पर दादागिरी जमाते। धीरे-धीरे वर्जिश करके खरगोश ताकतवर बनता है। फिर वह बदमाशों को सबक सिखाता है और नन्हें खरगोशों की रक्षा करता है।

सहयोग राशि : 20 रुपये



14. एक भी कम न हो

दिलीप चिंचालकर

13 वर्ष की वेई मिंजी चीन के एक गरीब गाँव के एक स्कूल में शिक्षिका थी। इस अल्प आयु की शिक्षिका ने अपने कारनामों के जरिए उस स्कूल को एक समृद्ध और प्रसिद्ध स्कूल में बदल डाला। मगर कैसे? ...

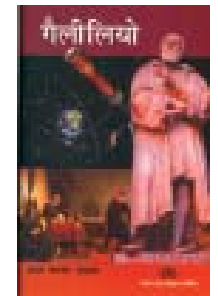
सहयोग राशि : 10 रुपये

15. गैलीलियो

बाल नाटक शृंखला

वैज्ञानिक जानकारी के अभाव में कथा-कहानियों, किंवदंतियों इत्यादि के जरिए अंधविश्वास एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जारी रहते हैं। एक सच्चा वैज्ञानिक कैद और मृत्युदंड का जोखिम उठाकर भी अंधविश्वासों के खात्मा और सत्य की स्थापना की हरसंभव कोशिश करता है। इस संग्रह के दो नाटकों – 1. गैलीलियो और 2. ग्रहण में भी सूर्य सुंदर – में भी कुछ ऐसे ही प्रयास किए गए हैं। वे अंधविश्वास क्या हैं और क्या हैं सच्चाइयाँ, जानिए इस पुस्तक से।

सहयोग राशि : 25 रुपये





16. अंधेर नगरी

भारतेंदु हरिश्चंद्र

वह नगरी ऐसी थी जहां सब कुछ टके सेर मिलता था— टके सेर भाजी, टके सेर खाजा। राजा के शब्द ही कानून थे— वह जिसे चाहे दंड दे, जिसे चाहे छोड़ दे। अकसर ऐसा होता कि गलती कोई और करता तथा सजा किसी और को मिलती। और एक दिन तो गजब हो गया— मुजरिम की जगह राजा ने खुद ही फांसी का फंदा अपने गले में डाल लिया।

सहयोग राशि : 12 रुपये

17. शेर और नन्हीं लाल चिड़िया

एलिसा क्लीविन

शेर की पूंछ का रंग रोज-रोज बदल रहा था। पहले वह पूंछ हरी थी, फिर नारंगी हुई, फिर आसमानी नीला और अब लाल। क्या था शेर की पूंछ के रंगीन होने का राज— यह जानने के लिए नन्हीं लाल चिड़िया बेचैन थी। जब शेर और नन्हीं चिड़िया एक-दूसरे के संपर्क में आए तो इस तरह घुलमिल गए कि पूछो मत। फिर तो उनके आनंद की सीमा न रही।



सहयोग राशि : 12 रुपये



18. मच्छड़राम

मास्टर बलदेव प्रसाद

मच्छड़ काटते हैं, खून चूसते हैं, मलेरिया जैसी बीमारी पैदा करते हैं। मच्छड़ों और इन बीमारियों को पैदा होने से रोका जा सकता है यदि साफ-सफाई रखी जाए, दवाओं का छिड़काव किया जाए और कुछ जरूरी सावधानियां बरती जाएं। और यदि बीमारी हो ही जाए तो इसका इलाज संभव है। इस नाटक में इन्हीं सब जानकारीयों को दो पात्रों— मच्छड़ और बालक— के संवाद के जरिए प्रस्तुत किया गया है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

19. बच्चों की कचहरी

केशवचंद्र वर्मा

— हां, हां, माली को जेल में बंद करवा दो!

— उसे बेंट लगाओ!

— नहीं, नहीं, उसे कालापानी नहीं, फांसी दी जाए!

बच्चे माली के सख्त खिलाफ हैं क्योंकि वह उन्हें बाग में घूमने नहीं देता, फूल तोड़ने नहीं देता और उन पर कड़ा पहरा रखता है।

‘बच्चों की कचहरी’ में बच्चे ही फरियादी हैं, बच्चे ही जूरी और बच्चे ही जज। इसलिए वे अपनी आजादी में बाधा पहुंचाने वाले माली को ‘कड़ी’ सजा सुनाते हैं।



सहयोग राशि : 12 रुपये



20. चुस्कट का पहला स्कूल!

सुजाता पद्मानाभन

नौ बरस की चुस्कट स्कूल जाना चाहती है। वह स्कूल जाकर गणित सीखना और खेलना चाहती है। वह स्कूल में बहुत सारे दोस्त भी बनाना चाहती है। परंतु चुस्कट स्कूल नहीं जा पाई, क्योंकि वह चल नहीं सकती थी। लेकिन एक दिन अब्दुल ने इस समस्या का हल खोज ही निकाला। सच्ची घटना पर आधारित एक प्रेरक कहानी।

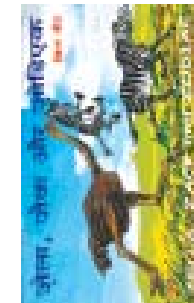
सहयोग राशि : 15 रुपये

21. हैरल्ड की बैंगनी पेंसिल

क्रौकिट जॉनसन

हैरल्ड के पास एक मोटी पेंसिल है जिससे वह जो चाहे बना सकता है। वह सड़क बनाता है और उसपर घूमता है। वह नाव की सैर करता है, पहाड़ी पर चढ़ता है और फिसलता है। गिरते-गिरते वह एक गुब्बारा बनाता है। घूमते-फिरते वह खो जाता है। फिर वह अपना घर कैसे खोजता है, पढ़िए इस अनूठी कहानी में।

सहयोग राशि : 25 रुपये



22. ज़ेला, जैक और जोडिएक

बिल पीट

नन्हा अनाथ शतुरमुर्ग चूजा मर ही जाता यदि कोमल मन वाली जेबरा जेला उसकी मां बनकर उसे न बचाती। बड़ा होने पर ऊंचा तगड़ा शतुरमुर्ग जैक कैसे अपनी धाय मां के अहसानों का बदला चुकाता है ... मुसीबतों में एक-दूसरे का हाथ थामने में जीवन की मुस्कान है ... पढ़ें इस सुंदर काव्य-कथा में।

सहयोग राशि : 25 रुपये

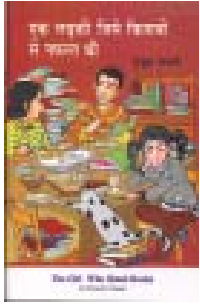
23. पिंग की कहानी

माजोरी फ्लैक और कूर्त वीज़

छोटा बतख पिंग अपने बहुत-से रिश्तेदारों के साथ यांगजी नदी पर तैरती एक खूबसूरत नाव पर रहता है। उसका जीवन बहुत सुखी है। लेकिन वह नाव के मालिक के तमाचे से बहुत डरता है। सिर्फ उस तमाचे से बचने के लिए पिंग एक दिन एक खतरा मोल ले लेता है। आगे वह किन-किन मुसीबतों का सामना करता है और बाहरी दुनिया के क्या-क्या रंग देखता है, पढ़िए इस चित्रों से सजी कहानी में।

सहयोग राशि : 20 रुपये





24. एक लड़की जिसे किताबों से नफरत थी मंजूषा पावगी

मीना का घर किताबों से भरा था। लेकिन उसे किताबों से सख्त नफरत थी। परंतु एक दिन एक ऐसी अनूठी घटी जिससे यह सब कुछ बदल गया। उस दिन क्या हुआ? इस रहस्य को जानने के लिए इस सुंदर कहानी को जरूर पढ़ें।

सहयोग राशि : 15 रुपये

25. बहुत सारी मछलियां मिलिसेंट सेलेम

नन्हे विली के पास कुछ पैसे हैं। उनसे वह कुछ सुनहली मछलियां खरीदता है। फिर एक-एक कर वह उन्हें रखने के लिए एक बड़ा मर्तबान, उनके खाने के लिए कुछ खास किस्म का चारा और कुछ दूसरी जरूरी चीजें भी खरीदता है। इस सब में उसके पिता उसकी मदद करते हैं। मछलियां पानी में ही क्यों रहती हैं? वहां वे सांस कैसे लेती हैं? वे खाती क्या हैं? उनकी जीवनचर्या क्या है? यह सब जानने के लिए पढ़िए इस पुस्तक के बीच पिता-पुत्र की बातचीत।

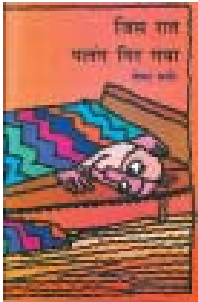
सहयोग राशि : 25 रुपये



26. जिस रात पलंग गिर गया जेम्स शर्ब

इस असंभव-सी लगने वाली घटना का माहौल बनाने के लिए जरूरी है कि फर्नीचर को यहां-वहां फेंका जाए, दरवाजे खड़काए जाएं, कुत्ते की तरह भौंका जाए ... पलंग क्या गिरा कि घर में चीख-चिल्लाहट शुरू हो गई, घर के लोग तरह-तरह की आशंकाओं से घिर गए और अफरा-तफरी मच गई। मां को लगा कि पिताजी परलोक सिधार गए। तन्मय को लगा कि उसका दम घुट रहा है ... पर असल में हुआ क्या था? पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



27. बोलने वाली बिल्ली प्रस्तुतकर्ता : डी. के. जैन

एक थी बिल्ली। उसका नाम था मिनको। एक थी बुढ़िया अपने घर-परिवार में अकेली। उसका नाम था टिमको। टिमको थी मालकिन और मिनको थी उसकी सहेली। यह बिल्ली बुढ़िया को हमेशा सलाह देती और उसके अकेलेपन को दूर करती। तो क्या मिनको उससे आदमी की भाषा में बात करती थी? हां। लेकिन क्या बिल्ली ऐसी भाषा बोल सकती है? नहीं। पढ़िए इस मजेदार लोक कथा में आदमी और जानवर के संवाद का रहस्य।

सहयोग राशि : 10 रुपये



28. चतुर बंदर दीप



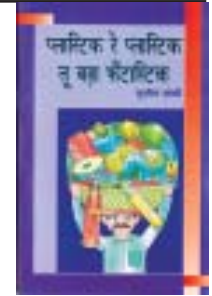
एक था बंदर और एक था सियार। दोनों गहरे दोस्त थे। दोनों जंगल में रहते थे। बंदर कई दिनों से भूखा था। वह गांव में गया और एक बनिये की दूकान में घुसकर खूब खाया-पीया। साथ ही बनिया, थानेदार और गांववालों को खूब छकाया, और सकुशल जंगल लौट आया। अब आई सियार की बारी। पर भई, नकल के लिए भी तो अकल चाहिए न? क्या-क्या हुआ सियार के साथ, पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

29. प्लास्टिक रे प्लास्टिक तू बड़ा फैंटास्टिक सुशील जोशी

खिलौने, रस्सी, बाल्टी, बोतल, आदि-आदि सभी प्लास्टिक के। जिधर भी नजर दौड़ाए प्लास्टिक से बनी कोई-न-कोई चीज दिख ही जाएगी। इस प्लास्टिक की भी अपनी कहानी है, अपना इतिहास है। इसके गायदे-घाटे हैं। इस छोटी-सी पुस्तिका में दर्ज हैं प्लास्टिक के विकास और दखल से संबंधित मनोरंजक जानकारीयां।

सहयोग राशि : 10 रुपये



सहयोग राशि : 10 रुपये

30. मेंढक राजा सुकुमार राय

इस संग्रह की दोनों कहानियां – 1. मेंढक राजा और 2. छाते का मालिक – मेंढक के इर्द-गिर्द बुनी गई हैं। मेंढकों को एक राजा की चाहत थी। मगर जैसे ही उन्हें राजा मिला वे उससे पिंड छुड़ाने को तड़प उठे। आखिर क्यों?... और जिसे लोग “मेंढक का छाता” समझे बैठे थे वह तो कुछ दूसरा ही निकला। तो फिर वह किसका छाता था?... इन सवालों के जवाब देती हैं ये रोचक कहानियां।

31. पप्पू की पतंग एलिजाबेथ मैकडोनाल्ड

पप्पू अपने घर के पास के टीले से पतंग उड़ा रहा था। अचानक हवा का एक तेज झोंका आया। पप्पू पतंग की डोर के साथ लिपटा खिंचता चला गया। वह डर के मारे ‘बचाओ-बचाओ’ चिल्लाने लगा। उसे बचाने के लिए दो और आदमियों ने डोर पकड़ी, पर पतंग के साथ वे सभी खिंचते चले जा रहे थे। फिर तो पप्पू और पतंग को बचाने के लिए तीन औरतें, चार घुड़सवार, पांच मछुआरे, छह किसान, सात वेटर, आठ नाविक, नौ ग्राहक और दस फायरमैन एक-एक कर पतंग की डोर पकड़ते गए। मगर क्या वे उन्हें बचा पाए? वे खुद भी बच पाए? पढ़िए इस मनोरंजक काव्य-कथा में।



सहयोग राशि : 20 रुपये

32. संख्या-जगत में खेल-कूद

पी.के. श्रीनिवासन



सहयोग राशि : 30 रुपये

प्राकृतिक संख्या-तंत्र में अनगिनत अद्भुत पैटर्न छिपे हैं— कुछ अत्यंत सरल हैं तो कुछ अति-जटिल। कुछ सीधे-साधे हैं तो कुछ अति-गहरे। जोड़ना-घटाना, गुणा-भाग करना इत्यादि सीख चुके प्राथमिक स्कूल के बच्चे अपनी योग्यता का प्रयोग करके संख्या-तंत्र के रोमांचकारी जगत में प्रवेश कर सकते हैं और मजे-मजे में अनेक खोजें कर सकते हैं। इस खोज में बच्चों को जिस आनंद और आत्मविश्वास की अनुभूति होगी, उसके द्वारा वे गणित के अध्ययन के प्रति उत्साहित होंगे। संख्याओं से खेल-कूद के आनंदलोक में ले जाती है यह पुस्तक।

33. नकचढ़ी राजकुमारी

कैथलीन मुलडून

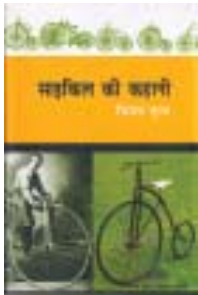
पेनीलोप की छोटी बहन पैटी जेन उसे 'नकचढ़ी राजकुमारी' कहकर बुलाती है। एक दिन पैटी उसके पहियों वाले सिंहासन (व्हील चेयर) को लेकर चुपके से सड़क पर आ जाती है और चौराहे पर भयंकर ट्रैफिक में फंस जाती है। ट्रैफिक से निकलते ही वह बारिश में घिर जाती है। ...बाद में व्हील चेयर के पहिए कीचड़ से लथपथ हो जाते हैं। उस दिन पैटी के साथ बहुत कुछ ऐसी ही अनहोनी घटनाएं घटती हैं।... क्या-क्या हुआ उसके साथ, जानने के लिए पढ़िए यह कहानी।



सहयोग राशि : 15 रुपये

34. साइकिल की कहानी

विजय गुप्ता



बड़े होते हुए हम सबने साइकिल जरूर चलाई है। लेकिन साइकिल क्या हमेशा ऐसी ही थी? उसकी अपनी बढ़त की दास्तां क्या हैं? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 20 रुपये

35. दूर बहुत दूर

पी.आर. माधव पणिक्कर

पृथ्वी से चंदामामा कितना दूर है? और सूरज? आसमान में क्या-क्या हैं? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



36. लुलु मौसी

डेनियल पिकवॉटर

लुलु मौसी वर्षों से बर्फीले अलास्का में लाइब्रेरियन हैं। पर धीरे-धीरे वो वहां की ठंड से उकता जाती हैं। वो अपने देश वापस लौटती हैं अपनी स्लेज गाड़ी और चौदह कुत्तों के साथ। उनकी दास्तां इस कहानी में पढ़ें।

सहयोग राशि : 20 रुपये



37. इंसान इंसान कैसे बना

के.के. कृष्णकुमार

इस पृथ्वी ने कैसे जन्म लिया? फिर इसमें तरह-तरह के जीव-जन्तु कैसे आये? जीव-जंतुओं में से इंसान कैसे जन्मा और पृथ्वी पर छा गया? बच्चों की इस किताब में पाइये इनके जवाब।

सहयोग राशि : 25 रुपये



38. बदलते घर

के. रामचन्द्रन

बनमानुष से मनुष्य बनकर पहले हम पेड़ों से उतरकर गुफाओं में रहे। फिर हम हालात के अनुसार हमारे घरों की बनावट बदलते रहे। कैसे-कैसे? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



39. कोटिकी

के. राधाकृष्णन

प्राचीन काल में दक्षिण अमरीकी आदिवासी नाव में चलकर कई महासागर पार होकर सुदूर आस्ट्रेलिया पहुंचे थे। उसी यात्रा को फिर आज दोहराया गया। कैसे? जानिए इस किताब से।

सहयोग राशि: 15 रुपये





40. बालक और सूरज

वी.के. दामोदरन

एक जिज्ञासु बालक को सूरज खुद मिलने आता है। और अपनी पूरी कहानी सुनात है, शुरु से अंत तक। वह यह भी बताता है कि आने वाले दिनों में सूरज और पृथ्वी का क्या होगा। पढ़िए इस किताब में।

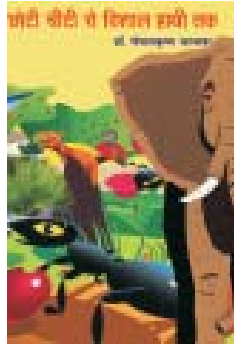
सहयोग राशि: 25 रुपये

41. छोटी चींटी से विशाल हाथी तक

डॉ. गोपालकृष्ण करनावर

दो चींटियां एक स्कूल के बस्ते में सवार होकर शहर देखने चलती हैं। उन्हें तरह-तरह के जानवर और दृश्य देखने को मिलते हैं।

ये चींटियां कहां-कहां की सैर करती हैं पढ़िए इस किताब में।
सहयोग राशि: 15 रुपये



42. चंदामामा

गोपालकृष्णन चुनवकर

आसमान में चमकते बच्चों के चंदामामा की कहानी क्या है? चंदामामा कहां से आए, क्यों आए, रोशनी कहां से लाते हैं, इन सब सवालों के जवाब पढ़ो इस किताब में।

सहयोग राशि: 25 रुपये

43. कभी न खत्म होने वाली किताब

प्रो.एस. शिवदास

हमारे आस-पास प्रकृति में कौन-कौन से पेड़-पौधे, कीड़े, पंछी, पशु हैं। इनकी उत्पत्ति कैसे हुई? मानव के आने के बाद प्रकृति में क्या हुआ? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 40 रुपये



44. अंकल टॉम का झोंपड़ा

पी.ए. वरियर

अमरीका में नीग्रो लोगों को गुलामी में क्या-क्या सहना पड़ता था, वे कैसे संघर्ष करते थे... पढ़िए दिल छू जाने वाली इस कहानी में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



45. जहां बर्फ कभी नहीं पिघलती

वी. श्रीकुमार

मुनष्य उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव कैसे पहुंचा, वहां पहुंचकर क्या पाया, वहां का जीवन-यापन कैसा है... पढ़िए इस किताब में।

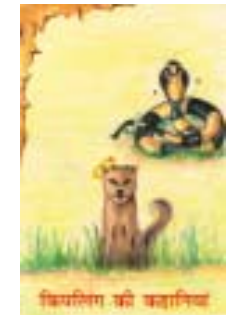
सहयोग राशि: 35 रुपये

46. किपलिंग की कहानियां

रडयार्ड किपलिंग

गुसलखाने में नेवले और सांप की लड़ाई कैसी रही? हाथी के बच्चे की पहचान क्या है? तेंदुए के शरीर पर निशान कैसे बने? पढ़िए रडयार्ड किपलिंग की इन कहानियों में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



जनवाचन पुस्तकमाला

1. हेंवल नदी के किनारे

भारत डोगरा



जंगल हमें क्या-क्या नहीं देते? भोजन, लकड़ी, चारा ईंधन आदि तो सभी जानते हैं। परंतु पेड़ हमें पानी भी देते हैं। वो बारिश की बौछारों से पृथ्वी को छाते की तरह बचाते हैं। पेड़ों की जड़ें मिट्टी को बांधकर रखती हैं और भूस्खलनों को रोकती हैं। पेड़ कटने का सबसे अधिक नुकसान महिलाओं को ही होगा क्योंकि उन्हें पहाड़ी रास्तों पर दूर दराज से लकड़ी और चारा लाना पड़ेगा। पेड़ों को ठेकेदारों के कुल्हाड़ी से बचाने के लिए ही उपजा था चिपको आंदोलन। इस पुस्तिका में चिपको आंदोलन की प्रेरणा, संघर्ष और सफलताओं को प्रस्तुत किया गया है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

2. हम कैसी दुनिया चाहते हैं

भारत डोगरा

इंसान ही दुनिया को गढ़ते हैं। अगर आज खराब हालात हैं तो उसका जिम्मा भी हमारा है। और हम चाहें तो एक खूबसूरत और सुंदर दुनिया भी रच सकते हैं। परंतु ऐसी दुनिया का हमारे जहन में एक नक्शा, उसकी एक झलक होना आवश्यक है। हम एक ऐसी दुनिया गढ़ सकते हैं जिसमें आर्थिक और सामाजिक बराबरी हो, शांति और भाईचारा हो, पर्यावरण की रक्षा हो और सभी जीवों के प्रति प्रेम का व्यवहार हो। यह सपना कैसे साकार हो, इसकी एक झलक मिलती है हमें इस पुस्तिका में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



3. चरखे का संदेश

भारत डोगरा



आज बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपने माल की खपत को जोरों से गांवों में बढ़ाने की कोशिश कर रही हैं। इसमें से बहुत-सी ऐसी उपभोक्ता वस्तुएं हैं जिनका निर्माण गांव में ही करना संभव था। गांवों में बेरोजगारी और गरीबी की समस्या का निदान तभी हो सकता है जब गांव में उपलब्ध संसाधनों का उपयोग गांव के लोगों के लिए ही किया जाए। इससे लोगों को रोजगार मिलेगा और गांवों की सम्पन्नता बढ़ेगी। आज के संदर्भ में यही चरखे का संदेश है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

4. सबके लिए स्वास्थ्य

भारत डोगरा



सहयोग राशि : 10 रुपये

जब लोगों के पास खाने के लिए नहीं है तो फिर वो दवाएं कहां से खरीदेंगे? आधी से अधिक बीमारियां दूषित पानी के कारण फैलती हैं परंतु हम अभी भी सभी लोगों को पीने का साफ पानी नहीं उपलब्ध करा पाए हैं। आज करोड़ों लोग एंडस से मर रहे हैं। और दवाई की बहुराष्ट्रीय कंपनियां इस मजबूरी का फायदा उठा रही हैं। जब तक दुनिया में बराबरी नहीं होगी और स्वास्थ्य कार्यक्रमों में लोगों की सहभागिता नहीं होगी तब तक सबके लिए स्वास्थ्य महज एक नारा बना रहेगा।

5. शराब को दूर भगाना है

भारत डोगरा

शराब जहर है। इससे सेहत बिगड़ती है, कलेजा जलता है, उम्र घटती है, घरेलू हिंसा बढ़ती है और परिवार टूटते हैं। मर्द शराब पीता है पर इसका शिकार घर में महिलाएं और बच्चे होते हैं। शराब विरोधी आंदोलनों में अक्सर महिलाओं ने अहम् भूमिका निभाई है। इस पुस्तिका में मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और हरियाणों में हुए शराबबंदी जनआंदोलन का उल्लेख है।



सहयोग राशि : 10 रुपये

6. सूचना का अधिकार

भारत डोगरा



सहयोग राशि : 10 रुपये

राजस्थान के एक छोटे जनसंगठन द्वारा दस साल पहले शुरू किया सूचना के अधिकार आंदोलन को आज सरकार को भी मानना पड़ा है। विकास पर किए खर्च का मात्र 15% ही गांव तक पहुंच पाता है। बाकी बीच के बिचौलिए, दलाल और ठेकेदार हजम कर जाते हैं। खर्च के हिसाब को एकदम गोपनीय रखकर ही यह चंडाल चौकड़ी पनपती फूलती है। सूचना का अधिकार मिलने से कोई भी व्यक्ति सरकारी रिकार्ड देखकर पता लगा सकता है कि घपला कहां हुआ है। इस प्रकार के प्रामाणिक दस्तावेजों ने जन-संघर्षों को एक नई ऊंचाई दी है।

1. देश बड़ा कब होता है

लालू

13 छोटी-बड़ी रोचक कविताओं का संकलन। कुछ कविताओं में अच्छी तुकबंदी है तो, कुछ कविताएं सोचने के लिए मजबूर करती हैं कि हथियारों से कोई देश बड़ा नहीं होता है। देश तब बड़ा होता है, जब वहां का बच्चा-बच्चा हंसता हो, पढ़ता हो और सबके लिए भोजन और पानी उपलब्ध हो।

सहयोग राशि : 8 रुपये





2. हमारे गांव की आशा

विष्णु नागर

बचपन से ही उपेक्षित और शोषित आशा नाम की एक गरीब लड़की की कहानी। आशा की इतनी बुरी हालत क्यों? कहानी हर मोड़ पर, हर कदम पर आपसे सवाल पूछती है और आपको कटघरे में खड़ा करती है। क्या आप आशा जैसी मूक और बेसहारा युवती को सहारा और पनाह देंगे या फिर उसे हिंसक शोषण का शिकार बनने देंगे?

सहयोग राशि : 8 रुपये

3. भाईचारे का इतिहास

डॉ. महरउद्दीन खां

अंग्रेजों ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जहर के बीज बोने के लिए इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना शुरू किया। इसी परंपरा को सांप्रदायिकता की राजनीति करने वाले आज भी आगे बढ़ा रहे हैं। परंतु इतिहास की सच्चाई है कि राजा केवल राजा ही होता था- हिंदू या मुसलमान नहीं। राजा की फौज में हिंदू और मुसलमान दोनों ही होते थे और अपने राज्य के विस्तार के लिए वो हिंदू और मुसलमान दोनों ही प्रकार के राज्यों पर आक्रमण करता था। इस पुस्तक में अनेकों ऐतिहासिक तथ्यों और उदाहरणों से इसे समझाया गया है।

सहयोग राशि : 8 रुपये



4. अली का न्याय

रिजवान जहीर उस्मान

यह कहानी गणित की एक रोचक पहेली पर आधारित है। एक आदमी के पास 5 रोटी है। दूसरे के पास 3 रोटी है और तीसरे के पास केवल आठ रुपये हैं। तीनों बराबर-बराबर रोटियां खाते हैं। तीसरा आदमी रोटियों के बदले में बाकी दोनों लोगों को आठ रुपये देता है। पहले और दूसरे को इन आठ रुपयों में से कितने-कितने मिलेंगे? प्रश्न का हल काफी आश्चर्यजनक है।

सहयोग राशि : 8 रुपये



5. राजा कुंआ

भगतसिंह सोनी

11 कविताओं का संकलन। कविताओं में राजा कुंआ, पेड़ों की महिमा, मिट्टी और सांस्कृतिक जड़ों आदि का बखान है। कविताओं में लिखने-पढ़ने और जीवन को अनुभव करने के महत्व पर भी बल दिया गया है।

सहयोग राशि : 8 रुपये



6. सही आकार

टुलटुल विश्वास

मशहूर वैज्ञानिक जे.बी.एस. हैल्डेन के मूल लेख पर आधारित। जीवों का जो आकार है उसका क्या आधार है? गिलहरी अगर 20-30 फीट की ऊंचाई से गिरेगी तो उसे सिर्फ एक हल्का झटका महसूस होगा। परंतु अगर कुत्ता इतनी ऊंचाई से गिरेगा तो उसकी हड्डी-पसली चकनाचूर हो जाएंगी। सारे जीव-जंतु अपनी-अपनी सहूलियत, अपने-अपने कामों के हिसाब से बिल्कुल ठीक ही बने हैं। अगर इसमें कुछ अंतर आ जाए तो बस भारी मुसीबत आ जाए। बेहद ज्ञानवर्द्धक विज्ञान की कथा।

सहयोग राशि : 8 रुपये



7. गिरगिट का सपना

मोहन राकेश

एक गिरगिट है जो अपनी ज़िंदगी से परेशान है। वो सांप बनना चाहता है। सांप की योनि से असंतुष्ट होकर वो नेवला बनना चाहता है। फिर वो पेड़ की टहनी और अंत में कौवा बनना चाहता है। इस तरह वो कई अन्य जीवों की परेशानियों से वाकिफ़ होता है और अंत में केवल गिरगिट ही बने रहना चाहता है।

सहयोग राशि : 8 रुपये



8. हम और हमारी एकता

यह लघुनाटक एक लंबी कविता के रूप में लिखा गया है। यह हमारी साझी विरासत, यानि गंगा-जमुनी संस्कृति को दर्शाता है। आजादी के 50 सालों बाद भी आम जनता अब भी अनपढ़ है, बेघर है, और भूखी-प्यासी है। दूसरी ओर एक छोटा सा शासक वर्ग मेहनतकश मजदूर और किसानों के खून-पसीने पर मौज कर रहा है। परंतु यह तस्वीर तभी बदलेगी जब लोग संगठित होंगे और संघर्ष करेंगे। तभी लोग कामयाब होंगे।

सहयोग राशि : 8 रुपये



9. ईश्वर की कहानियां

विष्णु नागर

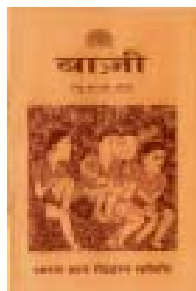
दुनिया तो ईश्वर के बताए रास्ते पर चलती है। पर ईश्वर हैं कि खुद धर्मशाला का रास्ता तक भूल गए हैं। ईश्वर द्वारा पृथ्वी पर बिताए समय के दौरान उन्हें कई खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। ईश्वर को न जाने क्यों पृथ्वीवासियों से प्यार हो जाता है और वो स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर ही बस जाते हैं। शायद वो अभी आपके सामने खड़े हों। क्या आप उन्हें पहचान पाए?

सहयोग राशि : 8 रुपये



10. बाज़ी

ल्यू शाओ शाङ



एक चीनी लघु कथा। अपने दोस्तों में बहादुर करार दिए जाने के लिए एक लड़का रात के घूँप अंधेरे में कब्रिस्तान जाकर बबूल का फूल तोड़ लाता है। इसमें एक मासूम बच्ची उसकी मदद करती है। परंतु दोस्त उस लड़के की बहादुरी पर शक करते हैं। शक को दूर करने के लिए वो लड़का उस मासूम लड़की को धक्का दे देता है। परंतु यह नाइंसाफी उसे सारी ज़िंदगी कचोटती है और उसकी आत्मा को धिक्कारती है।

सहयोग राशि : 8 रुपये

11. गिरगिट

अन्तोन चेखोव, रूपांतरण - सफ़दर हाशमी

यह बेहद रोचक लघुनाटक आज की व्यवस्था का सही आईना है। एक घूसखोर, कामचोर, पुलिसमैन बाजार में गरीब फेरीवालों का खूब माल लूटता है। यहां तक कि वो भिखारियों के पैसे भी चुराता है। सही मायने में रक्षक बन गया है भक्षक। पुलिसमैन बदलती परिस्थितियों के साथ-साथ अपना पैतरा और रंग भी गिरगिट जैसे बदलता है। बेहद पठनीय और सदाबहार नाटक।

सहयोग राशि : 8 रुपये



12. मंगलू यमराज के दरबार में

श्याम बहादुर नम्र



गरीब मेहनतकश मंगलू पुलिस की गोली से मरने के बाद यमराज के दरबार में पहुंचता है। परंतु पृथ्वी की बात तो और उसे यमलोक में भी न्याय नहीं मिलता है। यमलोक में भी वही आलम है जो कि सरकारी दफ्तरों में होता है। वहां पर भी वर्किंग कंडीशंस काफी खराब हैं। यमलोक में भी भ्रष्टा और घूसखोरी की जड़ें मजबूत हुई हैं। बेहद सटीक राजनैतिक कटाक्ष।

सहयोग राशि : 8 रुपये

13. आंख की कहानी

मशहूर पत्रिका रीडर्स डार्जेस्ट में 'आई. एम. जोज़ बाँडी' नाम की एक विज्ञान शृंखला छपी थी। इसमें अनूठे लेख थे। इन लेखों में से एक का रूपांतरण इस पुस्तक में है। इसमें आंख की कहानी को बहुत ही सरल और सटीक रूप में पेश किया गया है। इसे पढ़कर छोटी-सी आंख की विलक्षण कार्य प्रणाली को आप आसानी से समझ पाएंगे।

सहयोग राशि : 8 रुपये



14. कामगार औरतों के हक

विष्णु नागर



इस पुस्तक में मजदूर महिलाओं के हकों के बारे में कानूनी जानकारी को सरल ढंग से पेश किया गया है। अनपढ़ होने के कारण आज बहुत सी मेहनतकश औरतें मालिक और ठेकेदारों के शोषण का शिकार हैं। इस पुस्तक में न्यूनतम मजदूरी, ओवरटाइम, प्रसूति अवकाश के साथ-साथ कई और बुनियादी हकों की जानकारी दी गई है।

सहयोग राशि : 8 रुपये

15. जंगल में स्कूल

नरेंद्र कुमार

सतपुड़ा पहाड़ियों में कारकू आदिवासियों का एक छोटा-सा गांव है—रोरीघाट। तमाम सरकारी आशवासनों के बावजूद गांव में आजतक कोई स्कूल नहीं खुला। गांव के ही लोगों ने चंद किताबों और बेहद सीमित साधनों से खुद एक स्कूल चलाया। स्कूल में बच्चों ने पढ़ना सीखा और पत्थरों पर कोयले की चॉक से लिखना सीखा। धन के आभाव में स्कूल को कुछ समय बाद बंद करना पड़ा फिर भी बच्चों ने वहां आना नहीं छोड़ा।

सहयोग राशि : 8 रुपये



16. सुखोमाजरी का संदेश

अमिताभ



यह कोरी कल्पना नहीं बल्कि हरियाणा के एक गांव की सच्ची कहानी है। पानी की किल्लत से सारा गांव परेशान था। फिर कुछ लोगों ने बारिश का पानी जमा करने के लिए एक टैंक खोदा। उससे सिंचाई बढ़ी और लोगों का हौसला भी। धीरे-धीरे पानी को एकत्र करने के लिए और टैंक खुदे और आसपास खूब पेड़ और घास लगाई गयी। इससे सारा गांव हरा-भरा और सम्पन्न हो गया। सच्ची लगन और निष्ठा से इस प्रयोग को किसी भी अन्य गांव में दोहराया जा सकता है।

सहयोग राशि : 8 रुपये

17. बजट का झमेला

तापस चक्रवर्ती

बजट का मामला अहम सवाल है। इसे केवल अर्थशास्त्रियों और राजनेताओं के हाथों में छोड़ देना ठीक नहीं होगा। बजट के आंकड़े देश के हरेक नागरिक को प्रभावित करते हैं। आज हमारे देश के हरेक नागरिक के ऊपर 10,000 रुपए से अधिक का विदेशी कर्ज है। इस छोटी सी पुस्तक में बजट की बड़ी पेंचीदा बातों को बड़ी सरलता और प्रश्न-उत्तर के रूप में समझाया गया है।

सहयोग राशि : 8 रुपये



18. मैंने हिम्मत नहीं हारी

मासूम



यह गरीबी और बदहाली में पली एक लड़की की कहानी है। ग्यारह साल की कम उम्र में ही उसकी शादी हो जाती है। अनेक कष्टों को झेलते हुए वो अपनी मेहनत और लगन से कुछ लिखना-पढ़ना और सिलाई करना सीखती है। पति की मौत और कर्ज के बोझ में दबी होने के बावजूद वो छोटी-छोटी पुस्तकें लिखती हैं और गांव की औरतों को लिखना-पढ़ना सिखाती हैं।

सहयोग राशि : 8 रुपये

19. औरतों की कहानी औरत की जुबानी

निलिमा गुप्ता

पुस्तिका में छपी तीन कहानियां जो लड़कों और लड़कियों के लालन-पालन में भेदभाव पर प्रकाश डालती हैं। पुरुष प्रधान समाज कुछ लड़कियों का गला तो पैदा होते ही घोंट देता है और जो बच जाती हैं उनके साथ सारा जीवन सौतेला व्यवहार करता है। पर जहां भी लड़कियों को थोड़ा भी मौका मिलता है वहां वे तमाम विषम परिस्थितियों के बावजूद अपनी मेहनत के बलबूते पर लड़कों से आगे निकल जाती हैं।

सहयोग राशि : 8 रुपये



20. नित्यानबे का फेर

गोपाल प्रसाद मुदगल



पांच कहानियों का संकलन। कुछ कहानियां सामान्य तो कुछ में नैतिक संदेश। उदाहरण के लिए धन का लालच अच्छे भले इंसान को बरबादी की कगार पर ला सकता है।

सहयोग राशि : 8 रुपये

21. बहनों की पीड़ाएं

एक प्रेरक कविता जिसमें महिलाओं से गुलामी की जंजीरें तोड़ने का आह्वान किया गया है। महिलाएं—जो देश की आधी आबादी है अगर अशिक्षित हैं, उत्पीड़ित हैं, जलाई जा रही हैं, खुदकुशी करने को मजबूर हैं तो यह भला कैसी आजादी है? अब समय आ गया है कुंठाओं के बंधन तोड़ने का और अपने हक को हासिल करने का।

सहयोग राशि : 6 रुपये



22. पानीपत की हक़ो

सुरेश सलिल



आजादी के आंदोलन में अक्सर बड़े-बड़े नेताओं के नाम ही गिनाए जाते हैं परंतु संघर्षरत आम इंसान का कहीं भी जिक्र नहीं होता है। बूढ़ी हक़ो सारी जिंदगी मेहनत करके खदर बुनती रही। जब उसने गांधीजी को सुना तो बुढ़ापे की सुरक्षा की परवाह न करके वो अपने सारे गहने स्वराज्य फंड में दे आई। हक़ो कोई बड़ी नेता नहीं थी परंतु उसका योगदान इतिहास कभी भुला नहीं सकता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

23. बहनों के गीत

नरेंद्र कुमार, वीरेंद्र कुमार

यह मध्यप्रदेश में गाए जाने वाले महिलाओं के गीत हैं। कुछ गीतों में धार्मिक उपदेश हैं तो बाकी में महिलाओं का दर्द, उनका गुस्सा उनकी परेशानियां व्यक्त की गई हैं। कुछ दोहे महिलाओं की सामाजिक स्थिति का बहुत सटीक बयान करते हैं। यह गीत अवश्य ही महिलाओं के चेतना जागरण में सहायक होंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



24. सरला से बनी सरलाजी

विनय दुबे



यह लंबी कविता जमाना गांव की एक गरीब औरत सरला के बारे में है। सरला का बड़ा परिवार था और पति शराबी था। परंतु सरला ने दृढ़ निश्चय से काम लिया। उन्होंने मुसीबतें झेलते हुए लिखना-पढ़ना सीखा और फिर गांव की पंच बनीं। आज सरलाजी सरपंच हैं और पूरे गांव की खुशहाली का ध्यान रखती हैं। उनके पति को भी अब समझ आई है और उन्होंने शराब छोड़ दी है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

25. सपने और सच

यह कविता गरीब और अमीर देशों के बीच की गैरबराबरी को उजागर करती है। हमारे देश का शासक वर्ग अमरीका और वर्ल्ड बैंक के इशारों पर नाचता है। अमीर देशों में हमारे बासमती, नीम, हल्दी आदि को पेटेंट करने की होड़ लगी है। हमारी ही चीजों को चुराकर ये फिर हमें वही चीजें वापिस अधिक दाम पर बेचना चाहते हैं। इनकी साजिशों से हमें एकदम सतर्क रहना चाहिए।

सहयोग राशि : 10 रुपये





26. झुनझुना

नरेश पंडित

यह कहानी हिमाचल प्रदेश में रहने वाली एक महिला रेवती के बारे में है। रेवती का पति फौज में हैं और उसके एक छोटी लड़की है। फौज में नौकरी के कई साल बाद रेवती का पति गांव वापिस आता है। तो रेवती को तलाक देकर दूसरी शादी करना चाहता है। रेवती अनपढ़ है और पूर्णतः अपने पति पर निर्भर है। फिर भी वो हिम्मत करके इसे तलाक देती है और नए सिरे से अपने जीवन शुरू करने की प्रतिज्ञा लेती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

27. युद्ध से लौटा पिता और अन्य कविताएं

दीनू कश्यप

यह संवेदनशील कविताएं एक ओर तो युद्ध की निरर्थकता की ओर इशारा करती हैं तो दूसरी ओर फौज की तानाशाही का पर्दाफाश करती हैं। अच्छा हो कि तोपों, बमों, लड़ाकू विमानों पर हम खर्चा बरबाद न करें और इन पैसों को लोगों की शिक्षा और सेहत पर खर्च करें।

सहयोग राशि : 10 रुपये



28. दो गौरेयां

भीष्म साहनी

एक सुंदर कहानी। दो गौरेयां कमरे में लटके पंखे के गोल कटोरे में अपना घोंसला बना लेती हैं। पिताजी चिड़ियों को भगाने का बहुत प्रयास करते हैं परंतु जिद्दी चिड़िए मानती ही नहीं। कुछ दिनों बाद चिड़ियों से परेशान होकर पिताजी स्टूल पर खड़े होकर चिड़ियों का घोंसला गिराने की कोशिश करते हैं। तभी घोंसले में चीं-चीं-चीं करते दो बच्चे दिखाई पड़ते हैं। उन्हें देख पिताजी गौरेयों को भगाने का अपना इरादा छोड़ देते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये



29. सौ साल का सिनेमा

प्रेम रंजन अनिमेष

आज भारत फिल्में बनाने वाले देशों में सबसे आगे है। फिल्में दुनिया को जानने, समझने, मनोरंजन और शिक्षा का एक बहुत सशक्त माध्यम है। इस पुस्तक में बाईस्कोप से लेकर आजतक की आधुनिक फिल्मों का एक संक्षिप्त इतिहास है। पुस्तक में कुछ रोचक जानकारियां हैं जैसे शुरू की फिल्मों में महिलाओं की भूमिका भी मर्द अदा करते थे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



30. बात की बात ठिठोली की ठिठोली

संकलन - महमूद, अनिल

पहेलियां किसे पसंद नहीं? इस पुस्तक में 100 मजेदार पहेलियों का संकलन है। हरेक पहेली का अता-पता, चार पंक्तियों के एक छंद के रूप में है। पुस्तक के अंत में पहेलियों के हल भी बड़े मजेदार ढंग से दिए गए हैं। अगर आप कोई हल खोजना चाहते हैं तो आपको उसे 100 गड्ढम-गड्ढ हलों के जंगल में से ढूंढना होगा।

सहयोग राशि : 10 रुपये



31. आजादी की लड़ाई हिमाचल के जन विद्रोह - भाग - 1

विजय विशाल

आजादी की लड़ाई में हिमाचल वासियों ने भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। कई क्रांतिकारी जवान पढ़ाई-लिखाई छोड़ कर 'गद्द पार्टी' में शामिल हो गए। उन्होंने आंदोलन की अगुवाई की और देश भर में हिमाचल प्रदेश का नाम रोशन किया।

सहयोग राशि : 10 रुपये



32. आजादी की लड़ाई हिमाचल के जन विद्रोह- भाग - 2

विजय विशाल

पहाड़ी इलाका होने के कारण और आवागमन के साधनों की कमी के कारण हिमाचल में आजादी की लड़ाई की दिशा देश के अन्य भागों की तुलना में कुछ भिन्न रही। अंग्रेजों की सीधी खिलाफत करने की बजाए यहां के क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों का प्रतिनिधित्व कर रहे राजे-रजवाड़ों के खिलाफ एक लंबा संघर्ष छेड़ा।

सहयोग राशि : 10 रुपये



33. आजादी की लड़ाई हिमाचल के जन विद्रोह - भाग - 3

विजय विशाल

इतिहास की पुस्तकें अक्सर राजा-रानियों के किस्से कहानियों से ही भरी होती हैं। परंतु देश की मेहनतकश जनता ही वास्तव में असली इतिहास रचती है। हिमाचल प्रदेश में भी लोगों ने अंग्रेजी गुलामी के खिलाफ लंबी लड़ाई लड़ी। उन्होंने विदेशी शासकों के जुल्म सहें परंतु कभी भी हार नहीं मानी।

सहयोग राशि : 10 रुपये





34. ईदगाह मुंशी प्रेमचंद

यह एक अत्यंत मार्मिक कथा है। गरीब और अनाथ बालक हामिद अपनी दादी अमीना के साथ रहता है। अमीना बर्तन मांज कर किसी तरह गुजर-बसर करती है। ईद के लिए उसने बड़ी मुश्किल से हामिद के लिए चार पैसे जोड़े हैं। ईदगाह में हामिद के दोस्त मिठाईयां खाते हैं और खिलौनें खरीदते हैं परंतु हामिद मोल-भाव करके अपनी दादी के लिए लोहे का एक चिमटा खरीदता है। इस कहानी को पढ़कर आंखें तर हो जाती हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

35. जा सुनियो हमरी काका रे नरेन्द्र कुमार

सामाजिक स्थितियों का खुलासा करतीं सुंदर कविताएं। कुछ उदाहरण हैं—
बिजली पानी पाएंगे, बड़े लोग फिर खूब। जब जाएगी झोपड़ी, बड़े बांध में
डूब। दूसरी मिसाल है— रोज-रोज आए नहीं, शिक्षक जाए भूल। बैठा मक्खी
मारता गांव का स्कूल।

सहयोग राशि : 10 रुपये



36. खोजा नसरुद्दीन भारत में रिज़वान ज़हीर उस्मान

दुनिया भर में मशहूर खोजा नसरुद्दीन का भारत आना भी सनसनीखेज रहा। रूढ़ियों और अंधी आस्थाओं का उन्होंने भारत में भी विरोध किया। सीधे और सरल स्वभाव के खोजा भारत में महिलाओं का दुख-दर्द देखकर उनके साथ हो लिए। परंतु सभी धर्मों के अंधविश्वासियों ने नए युग के इस कबीर को दुत्कारा। बेहद मजेदार घटनाएं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

37. न बड़ा न छोटा विष्णु नागर

कौन छोटा है और कौन बड़ा? यह सवाल इंसानियत की पैदाइश के समय से ही पूछा जा रहा है। इस लंबी और रोचक कविता में इतिहास के इस अहम सवाल पर प्रकाश डाला गया है। मिसाल के तौर पर कोई सिर्फ कमाकर लाए, कोई सिर्फ डटकर खाए। जो कपड़े बनाए वही नंगा चला आए। जो अन्न उपजाए वही खाने को तरस जाए।

सहयोग राशि : 10 रुपये



38. बुलाकी बाबा सुरेस सलिल

बुलाकी बाबा हीरा आदमी थे। गांव की तरक्की का कोई काम हो या मुसीबत में फंसे किसी आदमी की मदद की बात हो, बुलाकी बाबा सबसे आगे रहते। इमारत के अभाव में कई बरस तक उनकी ही चौपाल में गांव का स्कूल लगा। वो गंगा के मेले में हमें अपनी बैलगाड़ी में बैठा कर ले जाते और रास्ते भर मजेदार कहानियां सुनाते थे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



39. आओ बात करें रिज़वान ज़हीर उस्मान

यह नाटक एक तानाशाह राजा और उसके उदास मंत्री के बारे में है। जन्मदिन के उपहार में राजा ने मंत्री को मौत की सजा सुनाता है। कुछ बच्चे बस्ता हल्का करने की अपील लेकर उसके पास आते हैं। मंत्री उन्हें दुत्कार देते हैं। कुछ लड़कियां शिक्षा का अधिकार मांगने आई हैं। मंत्री उन्हें भी भगा देता है। अपने अंतिम कुछ क्षणों में मंत्री ज़िंदगी का लुत्फ उठाने के लिए नाच उठता है। राजा को समझ नहीं आता है कि वो अब क्या करे।

सहयोग राशि : 10 रुपये



40. लादूभोगा की कहानी रिज़वान ज़हीर उस्मान

लादूभोगा एक सरल सीधा किसान था। उसका लड़का दस्तों के कारण मर जाता है। गम के कारण लादूभोगा शराब पीने लगता है और पूरी तरह बरबाद हो जाता है। खेत-खलिहान बिक जाते हैं और पत्नी भी मर जाती है। एक साधू लादूभोगा को शराब छोड़ने की सलाह देता है। लादूभोगा सुधर जाता है और दुबारा से नई ज़िंदगी शुरू करता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

41. तीन बेटियों की मां शुभा

आजकल पुत्र की लालसा में लोग डॉक्टरी जांच कराने के बाद बच्चियों को मां की कोख में ही मार रहे हैं। यह सशक्त लेख इस बात की खिलाफत करता है। इसमें कर्तारा देवी— एक अनपढ़ मजदूर महिला के सशक्त विचारों को रखा गया है। उनकी तीन बेटियां हैं और वो उनसे बेहद खुश हैं। अगर बेटियां ही नहीं होंगी तो समाज आगे कैसे बढ़ेगा?

सहयोग राशि : 10 रुपये





42. औरतों के लिए कविताएं

शुभा

कविताओं के इस संकलन में महिलाओं के अहम रोल पर प्रकाश डाला गया है। दिन-रात खटने के बाद भी महिलाओं के काम को काम का दर्जा नहीं दिया जाता है। पर औरतें क्या नहीं करती हैं। वे बच्चे को बैल जैसा बलिष्ठ नौजवान बना देती हैं। वे आटे को रोटी में, कपड़े को पोशाक में और धागे को कपड़े में बदल देती हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

43. हमारे तालाब

मधु बी. जोशी

यह पुस्तक अनुपम मिश्र की लिखी दो पुस्तकों 'राजस्थान की रजत बूंद' और 'अभी तक खरे हैं तलाब' से संकलित की गई हैं। यह दोनों पुस्तकें अपने जैसी अनूठी पुस्तकें हैं। इन पुस्तकों से प्रेरित होकर गांव-गांव में लोग पुराने तलाबों, जोहड़ों, कुईयों को ठीक कर रहे हैं। इन परंपरागत साधनों द्वारा हजारों सालों से अल्प वर्षा में भी लोगों ने प्यास बुझाई है। नई विकसित तकनीकों के बावजूद ये पुराने तरीके अभी भी खरे और सार्थक हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये



44. ताप, भाप और आप

लाल्टू



इस नाटक में पानी से भाप बनने के वैज्ञानिक सिद्धांत को वर्तमान सामाजिक स्थिति समझने के लिए उपयोग में लाया गया है। दो प्लेटों में पानी है। इनमें से दूसरी प्लेट को ढंक दिया जाता है। पहली प्लेट का पानी थोड़ी देर में उड़ जाता है जबकि दूसरी प्लेट में पानी रहता है। प्लेट का ढक्कन गांव की सम्पन्नता है। अगर गांव खुशहाल होता तो कुछ लोग शहर की ओर पलायन करने के बाद गांव भी वापिस लौटेंगे।

सहयोग राशि : 10 रुपये

45. पुलिस और हम

विष्णु नागर

क्या पुलिस आपको महज शिकायत के आधार पर गिरफ्तार कर सकती है? क्या हरेक मुजरिम को हथकड़ी लगाना जरूरी है? कितने दिनों तक पुलिस गिरफ्तार व्यक्ति को थाने में रख सकती है? जमानत कौन ले सकता है? यह एफ.आई.आर. क्या बला है? इस पुस्तक में आम आदमी और पुलिस के बीच के कानूनों को बड़ी सरलता से और प्रश्न-उत्तर के तरीके से समझाया गया है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



46. डायन व अन्य कहानियां

संजीव



गांव में कई मुसीबतें एक साथ आती हैं। लोग इनका कारण एक बूढ़ी औरत पूनो को मानते हैं। पूनो को लोग डायन समझ कर मार डालते हैं। पर अगर डायन इतनी ही ताकतवर थी कि वो दूसरों का बुरा कर सकती थी तो वो खुद अपनी ही जान क्यों नहीं बचा पाई? संकलन में दो अन्य कहानियां हैं। बेटी होगी या बेटा इसका जिम्मेदार पूरी तरह से पिता होता है, न कि मां।

सहयोग राशि : 10 रुपये

47. गुलेल का खेल

भीष्म साहनी

यह कहानी लेखक के एक साथी बोधराज के बारे में है। बोधराज अपनी गुलेल से घोंसलों को गिराता और चिड़ियों को मारता। परंतु एक दिन उसने चील को दो मैना के बच्चों पर झपटते हुए देखा। उसने चील पर गुलेल चलाई और मैना के बच्चों को एक सुरक्षित स्थान पर छिपाया। अब बोधराज ने गुलेल छोड़ दी है। उसकी जेबों में मैना के बच्चों के लिए चुगगा भरा रहता है। सुंदर और रोचक कहानी।

सहयोग राशि : 6 रुपये



48. मां का दूध

रिजवान जहीर उस्मान



प्रस्तुत पुस्तक में मां के दूध के महत्व को सरल ढंग से समझाया गया है। मां का दूध ही बच्चों के लिए सबसे उपयुक्त है। पोषण के साथ-साथ मां के दूध में कुछ ऐसे तत्व भी होते हैं जो छोटे बच्चों को बीमारियों से बचाते हैं। बोतल के दूध, डिब्बे के दूध पचने में आसान नहीं होते। उनमें पानी मिलाना पड़ता है और अगर पानी गंदा हुआ या बोतल गंदी हुई तो उससे बच्चे को बहुत नुकसान भी हो सकता है।

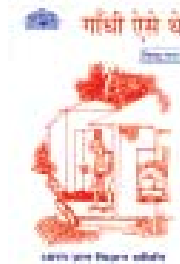
सहयोग राशि : 10 रुपये

49. गांधी ऐसे थे

विष्णु नागर

गांधीजी के जीवन के कुछ प्रेरक संस्मरण। गांधीजी न केवल उपदेश देते थे बल्कि उन्हें स्वयं जीते थे। वो अपनी सरलता से अपने दुश्मनों तक का दिल जीत लेते थे। इस पुस्तक में ऐसे ही कुछ रोचक प्रसंग हैं जिन्हें पढ़कर हमें गांधीजी की सादगी और महानता का अंदाज होता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



50. दुनिया के सबसे खूबसूरत आदमी की मौत

गाब्रियल गार्सिया मार्केज़



कहानी के लेखक साहित्य के नोबल पुरस्कार से सम्मानित हैं। समुद्रतट पर लोगों को एक लाश पड़ी मिलती है। वो एक भीमकाय और खूबसूरत आदमी की है। सारा गांव उसकी अंत्योष्ठि में लग जाता है। उस आदमी को देखकर गांववालों को अपने आसपास की बदसूरती का अंदाज़ा होता है। वो अपने घरों और अपने आसपास के सारे माहौल को बदलने की कसम खाते हैं जिससे कि वो गर्व से कह सकें कि वो खूबसूरत आदमी उन्हीं के गांव का था।

सहयोग राशि : 10 रुपये
51. संघर्ष कथा

सहीराम

अल्हा की शैली में लिखी यह एक लंबी कविता है। इसमें सामाजिक अन्याय, शोषण आदि का सजीव वर्णन है और महिलाओं, हरिजनों की दयनीय स्थिति का भी उल्लेख है। सामाजिक क्रांति में मजदूर किसानों के साथ-साथ पुलिस और फौज़ भी शामिल होगी क्योंकि आखिर पुलिसमैन और फौजी भी तो मजदूर-किसानों के ही बेटे हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये

52. इंद्रा का हाथी

महेश दर्पण



हरिया कुशल लुहार था। वो अपनी पत्नी के लिए एक हाथी बनाता है। हाथी बेहद खूबसूरत है और उसकी प्रसिद्धी चारों ओर फैलती है। दारोगा उस हाथी को खरीदना चाहता है। जब हरिया उसे बेचने से मना कर देता है तो दारोगा उसे जेल में डाल देता है। हरिया की पत्नी इंद्रा पूरे हाथी पर 'इंद्रा का हाथी' वाक्य गोद देती है। दारोगा अब परेशानी में पड़ जाता है और हरिया को हाथी समेत छोड़ देता है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

53. दलुदास के हाथ क्यों कटे

संजय झा

दलुदास भूमिहीन है और जमींदार के घर बंधुआ मजदूर है। चुनाव में दलुदास जमींदार के उम्मीदवार को वोट न देकर एक प्रगतिशील उम्मीदवार को अपना वोट देता है। इससे जमींदार आगबबूला हो जाता है और दलुदास के हाथ कटवा देता है। बिहार के गांवों में सामंती संबंधों का वास्तविक चित्रण।

सहयोग राशि : 10 रुपये



54. बराबरी के गीत

महिला जागृति के गीतों का सुंदर संकलन। मैं लड़की हूँ मुझे पढ़ना है गीत की एक झलक- मुझे दर-दर नहीं भटकना है, मुझे अपने पांवों चलना है, मुझे अपने डर से लड़ना है, मुझे अपने आप को गढ़ना है, मुझे पढ़ना है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

55. खेत में उगी मछलियां

विजय विशाल

हीरू का पति बुधिया उसको बात-बात पर ताने देता था। कहता था कि औरतों में अक्ल ही कहां होती है। हीरू ने बुधिया को अच्छा सबक सिखाने की ठानी। यह कहानी उसी के बारे में है। हीरू ने जो चाल चली उससे बुधिया के होश ठिकाने आ गए और वो हीरू की दाद मानने लगा।

सहयोग राशि : 10 रुपये



56. मेरी अम्मा

संजय कुमार



एक एक ग्रामीण मेहनतकश महिला की कहानी है जो सुबह से उठकर घर में खटती है और दिन भर ज़मींदार के घर का काम संभालती है। उसके बावजूद ज़मींदार का लड़का उसकी इज्जत लूटता है। कहानी में सामंती रिश्तों का, ज़मींदार और पुलिस के बीच सांठ-गांठ और गरीब हरिजनों के शोषण का सजीव चित्रण है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

57. कथा सुंदरलाल की

चंचल चौहान

एक पौराणिक लोककथा को वर्तमान संदर्भ में ढालने का प्रयास। राजा पुत्र की लालसा में दूसरा विवाह करना चाहता है। डर के मारे रानी अफवाह फैला देती है कि वो गर्भवती है। पंडित राजा से 18 वर्ष तक राजकुमार का मुंह नहीं देखने की सलाह देता है। राजकुमार की शादी में रानी आटे का पुतला बना देती है। उसे एक नाग-नागिन एक सुंदर राजकुमार में बदल देते हैं।

सहयोग राशि : 10 रुपये





58. चतुर चम्पा

हीरालाल नागर

चंपा का फौजी पति लड़ाई में शहीद हो गया, तब उसने कैसे अकेले अपने बच्चे को बड़ा किया और जीवन सफल बनाया? बन्तो के पति मर जाने के बाद उसके कैसे अपनी आस बंधी? ऐसी और भी कई कहानियां हैं इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

59. मुल्ला नसरुद्दीन के किस्से

चयन और पुनर्लेखन : विष्णु नागर

किसी को नहीं मालूम कि मुल्ला नसरुद्दीन नाम का कोई आदमी था या नहीं था। मगर उसकी अक्ल और सूझबूझ के दिलचस्प किस्से दुनिया भर में मशहूर हैं। कुछ किस्से पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



60. शतरंज की कहानियां

चंद्र किरण राठी

शतरंज खेल है या युद्ध है? क्या आंखों पर पट्टी बांधकर भी शतरंज खेली जाती है? क्या मशीनें भी शतरंज खेल सकती हैं? शतरंज के बारे में अनेक अनोखी बातें पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

61. लिखाई की कहानी

अनीता रामपाल

अक्षर को ऐसा क्यों लिखा जाता है, कब से लिखा जाता है? दूसरी भाषाओं में यही अक्षर दूसरी तरह लिखा जाता है। दुनिया में अलग-अलग किस्म की लिखाईयां हैं। ये कहां से, कब से शुरू हुई, यह सब जानिए इस किताब से।

सहयोग राशि : 10 रुपये



62. कहकहे

हंसी, कहकहे, हमेशा काम में आते हैं, अपने लिए और दूसरों को सुनाने के लिए। इस किताब में पढ़िये और संभाल कर रखिए छोटे-छोटे कहकहे।

सहयोग राशि : 10 रुपये

63. घरेलू उद्योग

शर्बत, फिनायल, नील, स्याही, मोरब्बा ऐसी चीजें घर बैठे आप खुद बना सकते हैं। फिर इनको घर में इस्तेमाल करने के अलावा बाजार में बेच कर पैसे भी कमाये जा सकते हैं। कैसे? सीखिए इस किताब से।

सहयोग राशि : 10 रुपये



64. अक्ल बड़ी या भैंस

शिवकान्त दुबे और जयमाला सोनी

टेढ़ी खीर का क्या मतलब होता है? अक्ल बड़ी होती है या भैंस? ऐसे सवालों का जवाब कहानियों में ही मिल सकता है। छोटी-छोटी मजेदार कहानियां पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

65. खरीददार के कानूनी हक्

विजय विशाल और अंशुमाला गुप्ता

बाजारों, दुकानों में जाकर हमारे मन में हमेशा डर लगा रहता है कि हम ठगे न जाएं। कभी सामान कम, या उसकी कीमत जरूरत से ज्यादा, या सामान गला-सड़ा या ऐसे और जोखिम होते हैं। लेकिन हमारे देश में कानून बने हुए हैं जो खरीददारों की रक्षा करते हैं। इन हकों को जानिए इस किताब से।

सहयोग राशि : 10 रुपये





66. उस गाँव की लड़की

सरिता सिंह

एक ऐसा गाँव है जहाँ लड़की जन्मने पर खुशियाँ मनायी जाती हैं, जहाँ लड़कियों को लड़का के बराबर खाना और पढ़ाई दिलवायी जाती है, जहाँ लड़कियों की और उनके बच्चों की सेहत ठीक रहती है, बीमारियाँ दूर रहती हैं ...। कहां हो सकता है ऐसा गाँव, पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

67. एक इंसान को कितनी जमीन चाहिए?

लेव तोल्स्तोय

एक किसान के मन में जमीन के साथ कितना लगाव होता है कहना मुश्किल है। जमीन के साथ यह लगाव इंसान को कहां से कहां तक ले जा सकता है? यह प्राचीन कहानी तोल्स्तोय ने जनता में बसी हुई कहानियों से उठाकर सामने रखी है। यह कहानी भुलाए नहीं भूलती।

सहयोग राशि : 10 रुपये



68. चिंता की चार बहनें

चिंता और उसकी चार बहनें किस घर की लड़कियाँ हैं, आपके या मेरे घर की? एक एक बहन की क्या गति होती है, वह हमारे अपने घर की बात है। पढ़िये इस किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये

69. हड़ौती की कहानी

एक राजकुमारी को एक साधु ने मक्खी बनाकर रख दिया। एक सौतेली माँ ने अपने राजकुंवर बेटों को बनवास में भेज दिया। एक गरीब ब्राह्मण अपनी सात बेटियों को जंगल में छोड़ आया। ये सब कैसे अपनी अपनी मुश्किलों से बचकर निकले, पढ़िए इस कहानियों की किताब में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



70. तेंतर

मुंशी प्रेमचंद



तेंतर एक अंधविश्वास है कि तीन बेटों के बाद पैदा होनेवाली बेटी अशुभ होती है और उसके कारण परिवारवालों पर कोई विपदा जरूर आती है। आज के समाज में तो गर्भ में ही बच्ची का गला घोट दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी में जब बच्ची के जन्म के कई महीने बाद भी परिवार में कुछ भी अशुभ नहीं होता तो सब ताज्जुब में पड़ जाते हैं। बच्ची की दादी कुछ बीमार अवश्य पड़ती हैं पर वो भी खा-पीकर ठीक हो जाती है।

सहयोग राशि : 10 रुपये

71. क्यूं-क्यूं छोरी

महाश्वेता देवी

आमतौर पर बच्चों और खासकर के लड़कियों को सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। यह कहानी एक जिज्ञासू बच्ची की है। उसमें जानने और सीखने की ललक बहुत तेज थी। वो हमेशा सवाल पूछती और आसपास के सभी लोगों को अपने सवालों पर सोचने को मजबूर कर देती। वो समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर सवाल उठाती। वो बाल मजदूरी और बच्चियों की शिक्षा पर सवाल पूछती उसके प्रश्नों में छिपी है सामाजिक व्यवस्था के अन्यायपूर्ण स्वरूप की कहानी।

सहयोग राशि : 10 रुपये



72. मीराबाई

कमला भसीन



सहयोग राशि : 10 रुपये

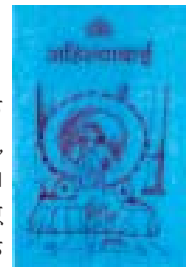
मीराबाई को कृष्णभक्त के रूप में तो सभी जानते हैं। परंतु यहां पर मीराबाई के जीवन के अन्य पक्षों को उजागर किया गया है। मीराबाई ने अपनी ज़िंदगी में हर कदम पर पुरुष प्रधान समाज के नारी विरोधी रीति-रिवाजों को चुनौती दी। उन्होंने शोषण के बंधनों को तोड़कर अपने लिए एक नई राह बनाई। उस समय का अन्यायपूर्ण समाज भी मीराबाई को लगन और विश्वास को हिला नहीं पाया।

73. अहिल्याबाई

वीणा शिवपुरी

अहिल्याबाई की ज़िंदगी में कदम-कदम पर दिक्कतें आईं। परंतु उन्होंने हरेक मुसीबत का सामना अपने आत्मबल और दृढ़ निश्चय के आधार पर किया। पति, पुत्र की मृत्यु से विचलित न होकर उन्होंने बेहद चुस्ती से अपना राज चलाया। ढाई सौ साल पहले उन्होंने रूढ़ीवादी समाज में झूठी मान-मर्यादा की परवाह किए बिना सती होने से इंकार किया। अहिल्याबाई का जीवन चरित्र आज भी कर्मठ औरतों के लिए आदर्श है।

सहयोग राशि : 10 रुपये



नव जनवाचन पुस्तकमाला

सोच समझ

1. भगवद्गीता के सामाजिक-राजनीति पहलू डी.डी. कोसांबी

गीता कब लिखी गई? क्यों लिखी गई? गीता से किन लोगों कबो फायदा होता है, किनको नुकसान? पढ़िए प्रसिद्ध विद्वान डी.डी. कोसांबी की लिखी इस पुस्तिका में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



2. वेदों का देश ई.एम.एस. नंबूद्रीपाद

वेद आज पुराने पड़ गए हैं। लेकिन वेदों के समय हमारा देश कैसा था, तब से अब तक देश में, क्या-क्या बदलाव आए और क्यों आए— पढ़िए इस सरल किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



3. भारत में बौद्धधर्म का क्षय डी.डी. कोसांबी

वेदों के काल के अंत में भारत में बौद्ध धर्म आया, और पहले पूरे भारत में, फिर अफगानिस्तान, चीन, जापान, बर्मा आदि देशों में फैल गया। मगर कुछ ही सदियों बाद यह सिर्फ भारत में लगभग लुप्त हो गया। ये सब क्यों हुआ? कैसे हुआ? पढ़िए इस पुस्तक में।

सहयोग राशि: 20 रुपये

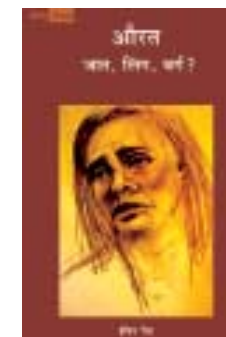


4. औरत जात, लिंग, वर्ग?

ईविन रीड

नारी को अलग वर्ग मान लिया जाए? या कि एक लिंग समूह? या फिर एक अलग जाति? इन उलझे उलझाने वाले सवालों की है यह किताब।

सहयोग राशि: 20 रुपये



5. लिंग और जाति मार्क्सवादी नजरिए से रंगनायकम्मा

जाति के सवाल को और नारीत्व के सवाल को अलग-अलग नजरियों से देखा परखा जाता है। इन पर मार्क्सवादी नजरिया क्या है? पढ़िए इस पुस्तक में।

सहयोग राशि: 20 रुपये

6. महिलाओं के मुद्दे

क्लारा जेटकिन

महिलाओं के मुद्दे जाति के मुद्दे हैं, या वर्ग के, या एक उत्पीड़ित लिंग के? लेकिन इन मुद्दों को कैसे देखते थे? पढ़िए जर्मन नारीवादी क्लारा जेटकिन की इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



7. बंदर से मानव फ्रेडरिक एंगेल्स

इंसान पहले बंदर था, यह सब जानते हैं। लेकिन कुछ बंदर इंसान नहीं बन पाये, और बंदर रह गये। क्यों? इस परिवर्तन के ठोस और वैज्ञानिक कारण हैं। क्या हैं वे कारण? पढ़िए इस विश्वविख्यात पुस्तक में।

सहयोग राशि: 15 रुपये



8. क्रांतिकारी चिकित्सा

चेत ग्वेयारा

क्या हमारी सेहत को डॉक्टरों, अस्पतालों और दवाइयों की मोहताज रहना जरूरी है? क्या बिमारियां दूर करने का कोई और नुस्खा है? कैसे? पढ़िए दुनिया के सबसे मशहूर क्रांतिकारी और डॉक्टर चेत ग्वेयारा के शब्दों में।

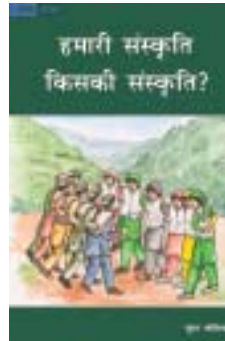
सहयोग राशि: 20 रुपये

9. हमारी संस्कृति, किसकी संस्कृति?

सुंदर लोहिया

पूजा-अर्चना में नारियल फोड़ना, तिलक-ताबीज लगाना, सामूहिक नाच-गाना, क्या यह सब ही हमारी संस्कृति हैं? क्या कामगार-मजदूरों और सेठ-साहूकार, गोरे साहबों की संस्कृति एक है? संस्कृति किसका हथियार है? पढ़िए इस पुस्तक में।

सहयोग राशि: 30 रुपये

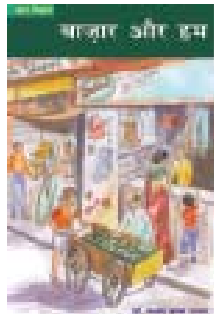


10. बाजार और हम

डॉ. माधव कृष्ण दातार

गांव के किनारे का छोटा-सा हाट बाजार, कस्बों या जिलों की मंडियां, शहरों के बाजार, पूरी दुनिया में फैले शेयर बाजार, ये सब कैसे बने क्यों बने? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 30 रुपये



11. दलित विवाद

फुले, गांधी, अंबेडकर दलित समस्या से भिड़े हैं, और यह समस्या अब भी बरकरार है। इस बहस में आज के एक प्रमुख दलित विद्वान, कांचा इलैया से बातचीत, पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



12. विज्ञान और उन्मुक्तता

डी.डी. कोसांबी

विज्ञान वस्तुओं, पदार्थों, पृथ्वी, ब्रह्मांड को चलाने वाले नियमों का नाम है। क्या विज्ञान मनुष्य की तबियत या इच्छाओं पर अंकुश लगाता है? यह पुराना सवाल है। इस पर नई रोशनी डालती है यह किताब।

सहयोग राशि: 15 रुपये



13. महिलाओं के प्रश्न

सी.एल.आर. जेम्स

महिलाओं की कई समस्याएं हैं। और एक समस्या से जुड़ी है दूसरी समस्याएं। इनको साफ शब्दों में कैसे सुलझाकर समझा जाए? पढ़िये प्रसिद्ध विद्वान सी.एल.आर. जेम्स की इस किताब में।

सहयोग राशि : 20 रुपये

ज्ञान विज्ञान



14. आकाश नीला क्यों होता है?

सी.वी. रमण

हमारी पृथ्वी में सारी रोशनी सूरज से आती है। और सूरज की रोशनी में इंद्रधनुष के सात रंगों का स्पेक्ट्रम होता है। तो आकाश का रंग नीला क्यों है? इस रहस्य को जानिए विश्व के महान वैज्ञानिक नोबेल पुरस्कार विजेता सी.वी. रमण द्वारा लिखी इस पुस्तक में।

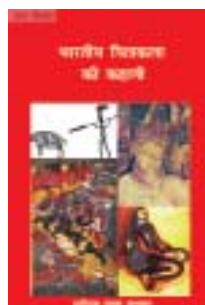
सहयोग राशि: 20 रुपये

15. भारतीय चित्रकला की कहानी

माणिक वाला वलकर

चित्रकला उत्पादन की तकनीक भी है, जैसे प्राचीन गुफा-चित्रों में शिकार सीखना-सिखाना, और कलात्मक आनंद का साधन भी, जैसे पूरी कहानी पढ़िए चित्रों से भरी इस किताब में।

सहयोग राशि: 35 रुपये



16. जुएं, कपड़े और आधुनिक मानव

टी.वी. वेंकटेश्वरन

और प्राणियों की तरह जुएं भी डार्विन के सिद्धान्त के अनुसार बदलती आई हैं। लेकिन जुओं का इतिहास मानव सभ्यता के साथ कैसे जुड़ गया? और जुओं के बदलाव ने प्राणी विज्ञान की क्या-क्या पहेलियां सुलझाई है? पढ़िए इस मजेदार किताब में।

सहयोग राशि: 10 रुपये

17. पैसे की माया का भंडाफोड़

लर्ड ईवन

पैसा क्या है? कैसे उपजता है? सोने-चांदी से? या मेहनत से? पैसे की समाज में असली जरूरत क्या होती है? पढ़िए इस किताब में, जो दुनिया की कई भाषाओं में निकल चुकी है।

सहयोग राशि: 20 रुपये



19. पुरातत्व

एम. एल्टिंग, एफ. फोल्सम

प्राचीन सभ्यताओं के खंडहरों और अवशेषों से इतिहास ढूंढ निकालने का काम है पुरातत्व विज्ञान का। लेकिन यह विज्ञान कैसे प्रयोग में लाया जाता है? इसकी तकनीकें क्या हैं? यह किताब अमरीकी महाद्वीपों में इस विज्ञान की कहानी से हमें एक अदभुत परिचय कराती है।

सहयोग राशि: 25 रुपये



20. सवाल दस रुपये का

मनोहर चमोली 'मनु'

अपनी मेहनत से कमाए गए पैसों से जब हम बाजार से जरूरी चीजें खरीदते हैं, तब क्या हमें उचित वस्तुएं, उचित दाम पर मिलती है? हमें ठगे जाने से बचाने के लिए देश में एक कानून है। इस कानून को समझिए इस कहानियों की पुस्तक में।

सहयोग राशि: 25 रुपये

21. गरीबी क्यों नहीं हटती

तापोश चक्रवर्ती

आजादी के 60 साल बाद भी गांधी, नेहरू जैसे महान नेताओं के बावजूद, तमाम योजनाओं, मंत्रालयों, विद्वानों के रहते हुए भी, अब भी तीन चौथाई भारत गरीब है। क्यों? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 30 रुपये

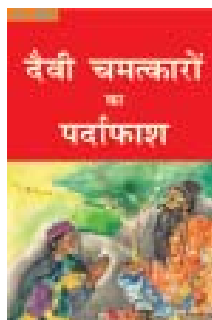


22. मई दिवस

ऐंडी मकिननी

पूरी दुनिया के मजदूरों का दिन 1 मई क्यों रखा गया? मजदूरों के कार्य दिवस की लंबे संघर्ष की कहानी क्या थी? क्या-क्या कुर्बानियां दी गई हैं मई दिवस के लिए? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



23. दैवी चमत्कारों का पर्दाफाश

सतबीर नागल, वेदप्रिय

कोई संत अंगारों पर चलता है, कोई निपूतों को संतान दिलाता है, कोई मूर्ति आंसू बहाती है। क्या यह सब देव-देवियों के चमत्कार हैं, या धूर्त धोखेबाजों के हथकंडे? पढ़िए इस किताब में।

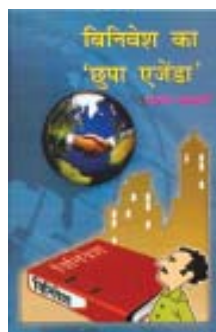
सहयोग राशि: 35 रुपये

24. बजट 21वीं शताब्दी में

तापोश चक्रवर्ती

‘बजट’, ‘काला धन’, ‘सबसिडी’ और ‘विनिवेश’ ऐसे शब्द हैं जो इन दिनों अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। ये शब्द महज शब्द नहीं हैं। इनके अर्थ बहुत गहरे हैं जो आम आदमी की जिंदगी को बनाने-बिगाड़ने का मादा रखते हैं। इनके इन्हीं अर्थों को खोलकर रखा है तापोश चक्रवर्ती ने ‘गुरु-चेला संवाद’ शैली में लिखी ‘बजट’ को जानने के लिए पढ़िए

सहयोग राशि: 15 रुपये



25. विनिवेश का ‘छुपा एजेंडा’

तापोश चक्रवर्ती

‘बजट’, ‘काला धन’, ‘सबसिडी’ और ‘विनिवेश’ ऐसे शब्द हैं जो इन दिनों अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। ये शब्द महज शब्द नहीं हैं। इनके अर्थ बहुत गहरे हैं जो आम आदमी की जिंदगी को बनाने-बिगाड़ने का मादा रखते हैं। इनके इन्हीं अर्थों को खोलकर रखा है तापोश चक्रवर्ती ने ‘गुरु-चेला संवाद’ शैली में लिखी ‘विनिवेश का छुपा एजेंडा’ को जानने के लिए पढ़िए

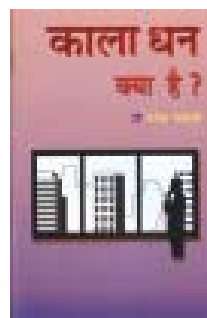
सहयोग राशि: 15 रुपये

26. काला धन क्या है?

तापोश चक्रवर्ती

‘बजट’, ‘काला धन’, ‘सबसिडी’ और ‘विनिवेश’ ऐसे शब्द हैं जो इन दिनों अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। ये शब्द महज शब्द नहीं हैं। इनके अर्थ बहुत गहरे हैं जो आम आदमी की जिंदगी को बनाने-बिगाड़ने का मादा रखते हैं। इनके इन्हीं अर्थों को खोलकर रखा है तापोश चक्रवर्ती ने ‘गुरु-चेला संवाद’ शैली में लिखी ‘काला धन क्या है’ को जानने के लिए पढ़िए

सहयोग राशि: 15 रुपये

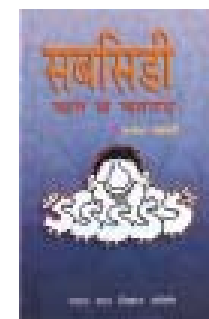


27. सबसिडी बात व बतंगड़

तापोश चक्रवर्ती

‘बजट’, ‘काला धन’, ‘सबसिडी’ और ‘विनिवेश’ ऐसे शब्द हैं जो इन दिनों अक्सर सुनने को मिलते रहते हैं। ये शब्द महज शब्द नहीं हैं। इनके अर्थ बहुत गहरे हैं जो आम आदमी की जिंदगी को बनाने-बिगाड़ने का मादा रखते हैं। इनके इन्हीं अर्थों को खोलकर रखा है तापोश चक्रवर्ती ने ‘गुरु-चेला संवाद’ शैली में लिखी ‘बजट’ को जानने के लिए पढ़िए

सहयोग राशि: 15 रुपये

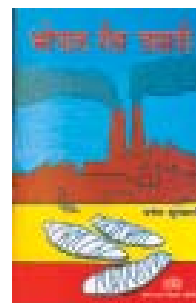


28. भोपाल गैस त्रासदी

मनोज कुलकर्णी

मुनाफाखोर बड़ी-बड़ी कंपनियां लाभ-लोभ के फेर में मनुष्य की जान की कीमत नहीं समझतीं। गैर-जवाबदेह राजनीतिक तंत्र के सहारे उनका कारोबार फलता-फूलता है। 3 दिसंबर 1984 को हुई भोपाल गैस त्रासदी इसका उदाहरण है। इस पुस्तिका में इस त्रासदी के विविध पहलुओं की छान-बीन की गई है।

सहयोग राशि : 15 रुपये



29. पीपल का भूत

इशितयाक

पीपल, अमरूद और बेल के पेड़ों पर कौवा, तोता और कुछ भूत रहा करते थे। इन भूतों का छोटे बच्चे अजित और लंगूर से भी लगाव था। ऐसा लगाव कि वे अजित के पक्ष में, सत्य के हक में पीर मियां द्वारा फैलाए जा रहे अंध विश्वास पर सख्त एतराज करते हैं। इस लघुनाटिका में पढ़िए प्रकृति-जगत के बीच आपसी अंतर्संबंधों की अद्भुत कहानी।

सहयोग राशि : 15 रुपये

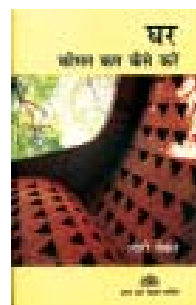


30. घर कीमत कम कैसे करें

लौरी बेकर

क्या घर बनाने के लिए सीमेंट और स्टील लाजिमी है? क्या ऊंचे-ऊंचे एयर कंडीशंड भवन बेहतर हैं? क्या दूसरे, अच्छे और सस्ते तरीके नहीं हैं? हैं— कहती है लौरी बेकर।

सहयोग राशि : 25 रुपये



गीत-नाटक



31. हिंसा परमो धर्म:

प्रेमचंद की एक कहानी है — हिंसा परमो धर्म:। यह नाटक इसी कहानी का परिवर्तित रूप है। इसमें यह बताया गया है कि कट्टरपंथी ताकतें, चाहे वे हिंदू हों या मुसलमान, समाज का भला करने वाली नहीं हैं, बल्कि वे उत्पीड़न का औजार हैं।

सहयोग राशि : 20 रुपये

32. मत बांटो इंसान को

1. मत बांटो इंसान को, और 2. अपहरण भाईचारे का — यही दो नाटक हैं इस संग्रह में। इनमें यह दिखाया गया है कि समाज में विघटनकारी शक्तियां किस तरह अपने दांवपेंच चला रही हैं और यह भी कि इनके प्रतिरोध के लिए समाज की प्रगतिशील ताकतें भी उठ खड़ी हो रही हैं। ये उनका पर्दाफाश कर रही हैं और उनसे यथासंभव टकरा रही हैं।

सहयोग राशि : 30 रुपये



33. लाशें बोलीं

1. लाशें बोलीं, 2. हम लेंगे बदला, और 3. रजनी की कहानी— ये तीन नाटक हैं इस संग्रह में। ये तीनों नाटक युद्ध, सांप्रदायिकता, खौफ के खिलाफ शांति, भाईचारे और प्रेम का संदेश देते हैं। कुल मिलाकर, ये इस धरती को खूबसूरत और मानवीय बनाने का सपना जगाते हैं।

सहयोग राशि : 18 रुपये

34. ये दिल मांगे मोर

इस संकलन में दो नाटक हैं — 1. ये दिल मांगे मोर और 2. सब में साहिब भरपूर है जी। ये दोनों नाटक कट्टरपंथी राजनीतिक, सामाजिक व धार्मिक शक्तियों का पर्दाफाश करते हैं और मानव-मानव के बीच व्यापक एकता के सूत्र का दिग्दर्शन कराते हैं।

सहयोग राशि : 30 रुपये



35. गधा पुराण

इस संग्रह में दो व्यंग्यात्मक नाटक हैं— 1. गधा पुराण, और 2. नहीं कुबूल। इनमें सत्ता के ढोंग और विदेशी ताकतों से इसके गंठजोड़ के नीचे पीसती-कराहती जनता की वास्तविक छवियों को उकेरा गया है। यहां भीषण दमन व शोषण है तो प्रतिरोध की एक छोटी-सी उभरती शक्ति भी है। इसी प्रतिरोध में कहीं बेहतर भविष्य के बीज मौजूद हैं।

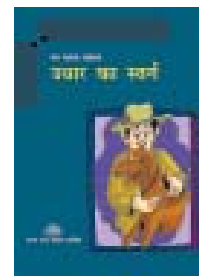
सहयोग राशि : 35 रुपये



36. उधार का स्वर्ग

इस लघु नाटक में झूठ और फरेब पर से पर्दा उठाते हुए इस बात का खुलासा किया गया है कि विकसित देशों से उधार लेकर अपने देश का उद्धार संभव नहीं है। उदारीकरण के नाम पर जो नई नीति लागू है वह भले ही कुछ नौकरशाहों, राजनेताओं एवं उनके दलालों का हित-साधन करे उससे आम जनता की बदहाली और बढ़ने ही वाली है।

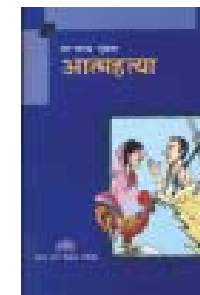
सहयोग राशि : 18 रुपये



37. आत्महत्या

1. आत्महत्या, और 2. मिडास — यही दो नाटक हैं इस संग्रह में। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बीज, खाद और कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से देशी कृषि-व्यवस्था का विनाश हो रहा है। फलतः हमारे किसान आत्महत्या करने को मजबूर हैं। ये दोनों नाटक इसी विषय-वस्तु को प्रस्तुत करते हैं।

सहयोग राशि : 20 रुपये



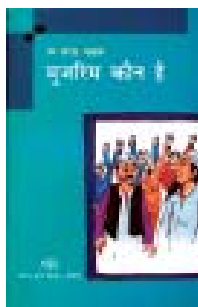
38. फर्क कहां है

असगर वजाहत

इस संग्रह में तीन लघु नाटक हैं— 1. फर्क कहां है, 2. सबसे सस्ता गोश्त, और 3. दोनों मारे जाएंगे। भारतीय समाज में कई-कई धार्मिक समुदाय हैं—हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध ...। इनके खून में कोई फर्क नहीं है। इनमें मन-भेद नहीं है। पर समाज के अंदर मौजूद सत्ता-लोलुप व स्वार्थी शक्तियां इनके बीच व्यर्थ की दुश्मनी पैदा करके अपना हित साधती हैं। ये नाटक इसी सच को उजागर करते हैं।

सहयोग राशि : 20 रुपये





39. मुजरिम कौन है

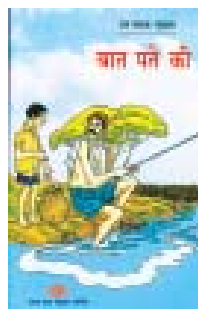
सांप्रदायिक शक्तियां विद्वेष को बढ़ावा देने के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। वे लोगों को उकसाती हैं कि वे आपस में कट मरें। ऊपरी तौर पर आपस में परस्पर विरोधी दिखने वाली ये शक्तियां भीतर-भीतर एक-दूसरे से गहरे तौर पर जुड़ी होती हैं। इस संग्रह के दोनों नाटक – 1. मुजरिम कौन है, और 2. हत्यारे – इसी सत्य का उद्घाटन करते हैं।

सहयोग राशि : 25 रुपये

40. बात पते की

इस संग्रह में तीन नाटक हैं – 1. बात पते की, 2. विकसित देशों की पहचान और 3. शिवनाथ नदी। तीनों नाटकों में देश और दुनिया की तीन गंभीर और विकट समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। पहला नाटक सांप्रदायिकता की, दूसरा नाटक विकसित देशों की दादागिरी की और तीसरा नाटक प्राकृतिक संसाधनों पर पूंजीवादी बहुराष्ट्रीय तंत्र की कब्जे की समस्या की तरफ ध्यान आकृष्ट करता है।

सहयोग राशि : 18 रुपये



41. बेटियों के पक्ष में

हमने अठ्ठारह साल पहले अपने जन विज्ञान आंदोलन की शुरुआत दिलों की धड़कनों से और गीतों से की थी। तबसे हम हमारे गीत लिखे, गाये और सुने जा रहे हैं। लाखों जन विज्ञान आंदोलनकारी स्त्री, बच्चे और पुरुष इन गीतों को गाते-सुनते आये हैं, और ऐसा चलता रहेगा। इस पुस्तक श्रृंखला में इन बिखरे गीतों को समेटने की कोशिश की गई है।

सहयोग राशि: 25 रुपये

42. हम होंगे कामयाब

हमने अठ्ठारह साल पहले अपने जन विज्ञान आंदोलन की शुरुआत दिलों की धड़कनों से और गीतों से की थी। तबसे हम हमारे गीत लिखे, गाये और सुने जा रहे हैं। लाखों जन विज्ञान आंदोलनकारी स्त्री, बच्चे और पुरुष इन गीतों को गाते-सुनते आये हैं, और ऐसा चलता रहेगा। इस पुस्तक श्रृंखला में इन बिखरे गीतों को समेटने की कोशिश की गई है।

सहयोग राशि: 20 रुपये



43. सारी दुनिया मांगेंगे

हमने अठ्ठारह साल पहले अपने जन विज्ञान आंदोलन की शुरुआत दिलों की धड़कनों से और गीतों से की थी। तबसे हम हमारे गीत लिखे, गाये और सुने जा रहे हैं। लाखों जन विज्ञान आंदोलनकारी स्त्री, बच्चे और पुरुष इन गीतों को गाते-सुनते आये हैं, और ऐसा चलता रहेगा। इस पुस्तक श्रृंखला में इन बिखरे गीतों को समेटने की कोशिश की गई है।

सहयोग राशि: 25 रुपये



44. पत्थरों को तोड़ा है

हमने अठ्ठारह साल पहले अपने जन विज्ञान आंदोलन की शुरुआत दिलों की धड़कनों से और गीतों से की थी। तबसे हम हमारे गीत लिखे, गाये और सुने जा रहे हैं। लाखों जन विज्ञान आंदोलनकारी स्त्री, बच्चे और पुरुष इन गीतों को गाते-सुनते आये हैं, और ऐसा चलता रहेगा। इस पुस्तक श्रृंखला में इन बिखरे गीतों को समेटने की कोशिश की गई है।

सहयोग राशि: 25 रुपये

चीन की कहानियां

45. गृहस्वामिनी

वांग रुनचि, पांग लिन

चीन विशाल और अनोखा देश है। 1949 की कम्युनिस्ट क्रांति ने उसका प्राचीन रूप बहुत बदल डाला। 1975 में एक और उथल-पुथल शुरू हुई जो आज तक कायम है। इन कहानियों में झलकते हैं ये तमाम किस्से।

सहयोग राशि: 35 रुपये



46. फैक्ट्री क्लर्क की डायरी

च्यांग चिलुंग, हांग इंग

चीन विशाल और अनोखा देश है। 1949 की कम्युनिस्ट क्रांति ने उसका प्राचीन रूप बहुत बदल डाला। 1975 में एक और उथल-पुथल शुरू हुई जो आज तक कायम है। इन कहानियों में झलकते हैं ये तमाम किस्से।

सहयोग राशि: 35 रुपये

47. दक्षिण झील का चांद

लू फूताहो, मां फंग

चीन विशाल और अनोखा देश है। 1949 की कम्युनिस्ट क्रांति ने उसका प्राचीन रूप बहुत बदल डाला। 1975 में एक और उथल-पुथल शुरू हुई जो आज तक कायम है। इन कहानियों में झलकते हैं ये तमाम किस्से।

सहयोग राशि: 35 रुपये



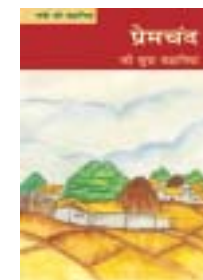
गांवों की कहानियां

48. प्रेमचंद की कुछ कहानियां

प्रेमचंद

भारत के पूरे इतिहास में प्रेमचंद एक अकेले इंसान हैं जिन्होंने भारत के गांवों की तस्वीर, वहां की उलझनें, और उनकी आत्मा को सबसे गहराई से जांचा और प्रकट किया। पूरी दुनिया का भारतीय गांवों से पहला और गाढ़ा परिचय प्रेमचंद की कहानियों के माध्यम से हुआ है।

सहयोग राशि: 20 रुपये



49. प्रेमचंद की कुछ और कहानियां

प्रेमचंद

भारत के पूरे इतिहास में प्रेमचंद एक अकेले इंसान हैं जिन्होंने भारत के गांवों की तस्वीर, वहां की उलझनें, और उनकी आत्मा को सबसे गहराई से जांचा और प्रकट किया। पूरी दुनिया का भारतीय गांवों से पहला और गाढ़ा परिचय प्रेमचंद की कहानियों के माध्यम से हुआ है।

सहयोग राशि: 20 रुपये



50. रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर

जो स्थान रूस में टॉल्स्टॉय का है वही स्थान भारत में टैगोर का है। बंगाल के रईस खानदान में जन्में टैगोर अपनी कविताओं, कहानियों, नाटकों, गीतों, चित्रों, उपन्यासों से बंगाल और भारत की आवाज बने। टैगोर के साहित्य ने आधुनिक दुनिया को भारत की ओर खींचा। उनकी कहानियां दुनिया की बेहतरीन कहानियां हैं।

सहयोग राशि: 20 रुपये



51. रवीन्द्रनाथ टैगोर की कुछ कहानियां

रवीन्द्रनाथ टैगोर

जो स्थान रूस में टॉल्स्टॉय का है वही स्थान भारत में टैगोर का है। बंगाल के रईस खानदान में जन्में टैगोर अपनी कविताओं, कहानियों, नाटकों, गीतों, चित्रों, उपन्यासों से बंगाल और भारत की आवाज बने। टैगोर के साहित्य ने आधुनिक दुनिया को भारत की ओर खींचा। उनकी कहानियां दुनिया की बेहतरीन कहानियां हैं।

सहयोग राशि: 20 रुपये





52. टॉल्स्टॉय की कुछ कहानियाँ

लियो टॉल्स्टॉय

जब रूस आधुनिक युग की दहलीज पर था, तब ऊँचे सामंती परिवार में जन्में टॉल्स्टॉय ने रूस की दूर-दूर तक फैली जनता में घूम-घूमकर आम रूसी गांवों के लोगों के बारे में ऐसा लिखा कि उनकी लिखी किताबें दुनिया में सबसे बेहतरीन साहित्य में गिनी जाती हैं।

सहयोग राशि: 25 रुपये

53. टॉल्स्टॉय की कुछ और कहानियाँ

लियो टॉल्स्टॉय

जब रूस आधुनिक युग की दहलीज पर था, तब ऊँचे सामंती परिवार में जन्में टॉल्स्टॉय ने रूस की दूर-दूर तक फैली जनता में घूम-घूमकर आम रूसी गांवों के लोगों के बारे में ऐसा लिखा कि उनकी लिखी किताबें दुनिया में सबसे बेहतरीन साहित्य में गिनी जाती हैं।

सहयोग राशि: 25 रुपये



54. लू शुन की कुछ कहानियाँ

लू शुन

जब चीन अंग्रेजों की लंबी गुलामी से निकलकर आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभर रहा था, तब चीनी समाज के ग्रामीण, साधारण लोगों के जीवन की तस्वीर और उनकी पहचान देने का काम लू शुन की कहानियों और उनके अन्य लेखन ने किया। लू शुन चीन के प्रेमचंद हैं।

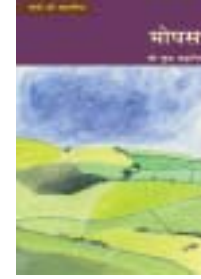
सहयोग राशि: 25 रुपये

55. लू शुन की कुछ और कहानियाँ

लू शुन

जब चीन अंग्रेजों की लंबी गुलामी से निकलकर आधुनिक राष्ट्र के रूप में उभर रहा था, तब चीनी समाज के ग्रामीण, साधारण लोगों के जीवन की तस्वीर और उनकी पहचान देने का काम लू शुन की कहानियों और उनके अन्य लेखन ने किया। लू शुन चीन के प्रेमचंद हैं।

सहयोग राशि: 25 रुपये



56. मोपसां की कुछ कहानियाँ

गी द मोपसां

फ्रांस के गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में आधुनिक युग की शुरुआत के नजारे और बदलते युग में इंसानी भावनाओं की उठापटक पायी जाती है मोपसां की कहानियों में। फ्रांस देश के आम आदमी के दिल और दिमाग की तस्वीरें हैं। इन कहानियों में।

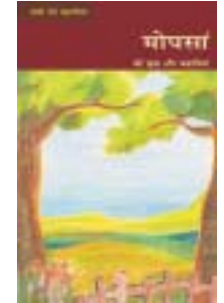
सहयोग राशि: 20 रुपये

57. मोपसां की कुछ और कहानियाँ

गी द मोपसां

फ्रांस के गांवों, कस्बों और छोटे शहरों में आधुनिक युग की शुरुआत के नजारे और बदलते युग में इंसानी भावनाओं की उठापटक पायी जाती है मोपसां की कहानियों में। फ्रांस देश के आम आदमी के दिल और दिमाग की तस्वीरें हैं। इन कहानियों में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



लोक कथाएं



58. इंडोनेशिया की लोककथाएं

प्रीता व्यास

प्रशांत महासागर में अनेकों द्वीपों का देश है इंडोनेशिया, जहां हर द्वीप की खास पहचान है, चरित्र है, जो इनकी अपनी लोककथाओं में झलकता है। इन लोककथाओं को पढ़िए इस किताब में।

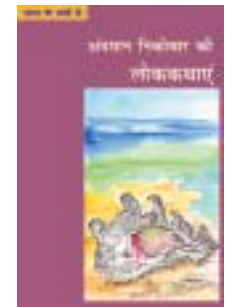
सहयोग राशि: 25 रुपये

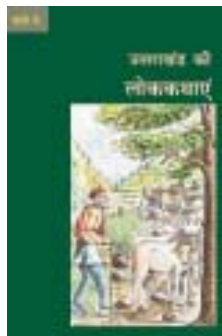
59. अंदमान निकोबार की लोककथाएं

लीलाधर मंडलोई

अंदमान-निकोबार के निवासियों का जीवन कैसा होता है, उनकी संस्कृति कैसी है, उनका मानस कैसा है, इसके बारे में हम लोग कम ही जानते हैं। इन सवालों के कुछ-कुछ जवाब उनकी लोककथाओं में मिलते हैं। इस पुस्तिका में हैं अंदमान-निकोबार की कुछ दुर्लभ लोककथाएं।

सहयोग राशि: 20 रुपये





60. उत्तराखंड की लोककथाएं

मनोहर चमोली 'मनु', जगमोहन 'चोपता'

उत्तराखंड वह अंचल है जहां से हिमालय की बर्फ का जल गंगा और यमुना की नदियां बनकर नीचे मैदानों, की ओर उतरना है। यहीं पर हैं प्राचीन इंसानी बस्तियों भाषाओं, सभ्यताओं की घाटियां और चीन, तिब्बत, नेपाल तक आने-जाने वाले उत्तरापथ का व्यापार-मार्ग और साथ ही साथ पुराने मंदिर, धाम, शिवाले, हरि और स्वर्ग के द्वार। इस अंचल की मार्मिक लोककथाएं पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 25 रुपये

61. राजस्थान की लोककथाएं

विजय दानदेश

देश की पश्चिमी पर रेगिस्तान से घिरा, पहाड़ियों दूंगरों, जंगलों, राजाओं, किलों का प्रदेश है राजस्थान। प्राचीन समय से ही ऊंटों के व्यापारियों के कारवान राजस्थान से होकर करांची, लाहौर और पेशावर आया जाता करते थे। मेहनती, सीधे-साधे मगर कड़क लोगों के समाज की लोककथाएं पढ़िए इस किताब

सहयोग राशि: 25 रुपये



क्लासिक



62. बेताल पच्चीसी

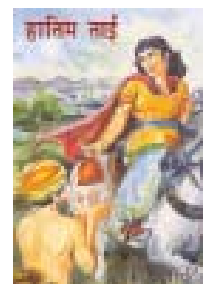
रहस्य, वीरता, ज्ञान और विवेक के सवालों पर रची गई भारत की प्राचीनतम कहानियों में बेताल पच्चीसी ऊंचा स्थान पाती है। इन्हीं कहानियों के प्रभाव में भारत के आस-पास के मुल्कों में उनकी अपनी कहानियां रची गई थी। इस पुस्तक में पढ़िए इनकी कुछ झलकियां।

सहयोग राशि: 25 रुपये

63. हातिमताई के किस्से

लगभग हजार-डेढ़ हजार सालों से भारत, पाकिस्तान, अरब-देशों, ईरान और उफगानिस्तान के घरों, चौपालों में लोग सुनते-सुनाते आए हैं हातिमताई नाम के युवक के किस्से। वीर, योद्धा, दयालु, जानवरों की भाषा समझने वाले, सबकी मदद करने वाले हातिमताई की यात्राएं, अजीबोगरीब अनुभव, और इन सबकी हैरतंगेज कहानियां पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



64. सिंहासन बत्तीसी

हजारों साल से भारत में सुनी-सुनाई जा रही कहानियां हैं सिंहासन बत्तीसी में। हर कहानी में मानव जीवन का खास अंग और उससे जुड़े नैतिक, भावनात्मक और युक्ति के सवाल हैं। पढ़िए इस पुस्तक में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



कियू की कहानी

नागुयेनर द्यू

अमरीका जैसे देश की फौजों को हराने वाले विनम्र देश वियतनाम की मशहूर दिल को छू जाने वाली कहानी है कियू की। कियू की कहानी पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 25 रुपये

65. ओडीसियस जादूगरनी के देश में

ग्रीक पुराण

ग्रीक-द्वीप इशाका का राजा ओडीसियस जादूगरनी सर्स के हाथों मारा जाता... और धरती की अनुपम सुंदरी साइकी मारी जाती प्रेम की देवी एफ्रोडाइट की साजिशों में फंसकर... वीर परसीयस ही कहां बच पाता! उसके तो दो-दो दुश्मन थे— एक तो खुद उसके नाना और दूसरा राजा पोलीडेक्टीस... उन भयंकर घटनाचक्रों के बीच से भी ओडीसियस, साइकी और परसीयस बच निकले। ... मगर कैसे? इसका बयान करती हैं इस संग्रह की तीन ग्रीक पुराण कथाएं।

सहयोग राशि : 15 रुपये



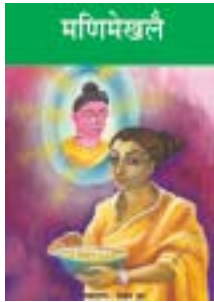
66. देवलोक से आग की चोरी

ग्रीक पुराण

प्रोमीथियस ने देवलोक से आग की चोरी की और उसे मानवों को उपहार में दिया।... ट्रोजन युद्ध के सारे विजेता अपने-अपने घर-परिवार में लौट गए और ओडीसियस वर्षों तक समुद्री तूफानों से जूझता रहा।... अन्न की देवी डिमीटर अपनी बेटी से बिछुड़कर क्रुद्ध हो गई और उसने फसलों पर कृपा-दृष्टि बंद कर दी। क्यों हुआ और कैसे हुआ यह सब— ग्रीक पुराण से ली गई इन कथाओं में पढ़िए।

सहयोग राशि : 15 रुपये





67. मणिमेखलै

प्रमोद झा

तमिल साहित्य की प्राचीन क्लासिक महागाथाओं में मणिमेखलै का ऊंचा स्थान है। संगम साहित्य का अंश मानी जाने वाली इस कहानी में दक्षिण भारत के बारे में बहुत कुछ जाना जा सकता है।

सहयोग राशि: 30 रुपये

विविध

68. औरत के भूत की कहानी

एर्लानन ब्लैकवुड

भूतों पर खोज करने वाली वैज्ञानिक महिला एक भूतहे कहलाये जाने वाले मकान में जाती है। लेकिन जो मकान का चौकीदार था वो कोई और ही निकलता है। और क्या होता है कहानी में पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 15 रुपये



69. शापित

ऐम्ब्रोज़ बायर्स

एक शिकारी की मौत पर जांच की जाती है। लेकिन जो शिकार में उसका साथी था उसकी कहानी पर विश्वास करना मुश्किल था। तो उसे किसने मारा? पढ़िये इस किताब में।

सहयोग राशि : 15 रुपये

70. वह जो भटक गया

ई.एफ. बेन्सन

दो प्रतिभावान चित्रकार मित्र कई सालों बाद मिलते हैं, एक मशहूर हो गया था, दूसरा गुमनाम हो गया था। गुमनाम चित्रकार अपनी कहानी बताते-बताते बहुत दूर, दूर, बहक जाता है। फिर क्या होता है, पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



71. खांसता हुआ आदमी

श्रीमती मोल्सवर्थ

एक युवा इंजिनियर जर्मनी से इंग्लैंड कुछ खुफिया कागजात लेकन चलता है। रास्ते में उसे एक खांसता हुआ आदमी अक्सर मिलता है। लंदन पहुंचकर वह पाता है कि मामला उलट गया है। क्यों? खांसते हुए आदमी की वजह से? पढ़िए मजेदार जासूसी कहानी।

सहयोग राशि : 15 रुपये



72. चुराई गई चिट्ठी

एडगर एलन पो

यूरोप के एक राजमहल से एक शाही चिट्ठी को एक मंत्री ने चुरा लिया है। यह बात मालूम होते हुए भी उसको पकड़ा नहीं जा सकता क्योंकि फिर उस चिट्ठी का राज राज नहीं रहेगा। उस चिट्ठी को बिना बताये वापिस कैसे लिया गया, पढ़िये इस जासूसी कहानी में।

सहयोग राशि : 25 रुपये

73. दलित कहानियां

हमारे देश के वासियों का एक बड़ा वर्ग रहा है जिनको 'ऊंची' जाति के लोगों ने हमेशा दूर-दूर रखा है। जिनकी छाया भी दूषित मानी जाती रही है, जिनके साथ खाना-पीना वर्जित रहा है, जिनके साथ रोटी-बेटी का रिश्ता नहीं हो सकता, मगर समाज के सारे जरूरी और मुश्किल काम जिनके जिम्मे डाले जाते रहे हैं, वे दलित लोग कैसे जीते-मरते हैं, पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



74. नया ग्राम स्वराज

तापोश चक्रवर्ती

भारत गांवों में बसता है, और जब तक गांवों की अपनी जरूरतों की भरपायी नहीं होती तब तक भारत की आजादी अधूरी है। सरकार से यह काम नहीं हो पा रहा है। उसको कैसे इस काम में प्रभावी ढंग से लगाया जाए? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 15 रुपये

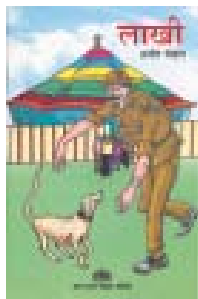


75. लाखी

अन्तोन चेखोव

एक दिन लाखी कुतिया अपने मालिक लुका से बिछड़ गई और एक अजनबी के हाथ लग गई। यह अजनबी लुका से उसे अच्छा खाना देता था, उसे तरह-तरह के करतब सिखाता था और उसे मौसी कहकर पुकारता था। यह साधारण कुतिया जब बहुत सीख गई तो एक दिन सर्कस में अपने करतब दिखाने के लिए लाई गई। दर्शकों में पुराना मालिक लुका और उसका बेटा भी था। उन्होंने उसे देखते ही देखते पहचान लिया और चिल्ला पड़े— “लाखी! लाखी!” फिर क्या था! लाखी करतब दिखाने की बजाय फलांगती हुई लुका की ओर दौड़ पड़ी। मालिक से बिछड़ने से लेकर मिलने तक लाखी ने बहुत कुछ क्या सोचा, देखा और महसूस किया... पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 18 रुपये

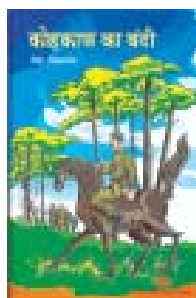


76. कोहकाफ का बंदी

लेव तोल्स्तोय

झीलिन फौज में अफसर है और कुंवारा है। अपनी बूढ़ी मां के यह कहने पर कि “मैंने बहू भी देख रखी है, वह समझदार है, सुंदर है और अपनी जागीर भी है उसकी। तुम्हें पसंद आ जाए तो शादी-ब्याह भी हो जाए, फिर तो फौज में लौटने की भी जरूरत न रहे।” वह छुट्टी लेकर मां से मिलने घर चल देता है। मगर वह रास्ते में तातारों द्वारा घेरकर बंदी बना लिया जाता है और उसे तरह-तरह की यातनाएं झेलनी पड़ती हैं। वह अपने घर भले ही न पहुंचा, लेकिन अपनी सूझबूझ से अपनी फौज में लौट आता है। कैसे बना वह बंदी, किन-किन मुसीबतों में पड़ा और कैसे मिली उसे उससे मुक्ति — पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 18 रुपये



77. ईश्वर और चुनाव

विष्णु नागर

शेर बकरी दिखता है और बकरी दिखती है शेर। इससे यह न समझिए कि दोनों का स्वभाव बदल गया है। ना भाई, ना। इस भ्रम में न पड़िए। यह तो चुनाव की लीला है। शेर के कथन पर ध्यान दीजिए, “... चुनाव में मैं उम्मीदवार हूँ और बदकिस्मती से बकरी मेरी मतदाता है।” यह उम्मीदवार ईश्वर से यह कहने में हिचकिचाता नहीं, “ऐसा है प्रभु जी, पूर्वज कह गए हैं, मजबूरी का नाम महात्मा गांधी है, वरना तो जी, हम भी मुंह में जुबान तथा कमर में ए.के. 47 रखते हैं...” ईश्वर और चुनाव के बहाने सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों पर अनेक तीर छोड़े गए हैं इस पुस्तिका में लिखी हुई इन छोटी-छोटी व्यंग्य-कथाओं में।

सहयोग राशि : 12 रुपये



78. भाग्य बड़ा या कर्म

विष्णु नागर

जिंदगी को समझने के दो नजरिए हैं। कुछ लोग मानते हैं कि भाग्य से ही जिंदगी में बड़े बदलाव आते हैं। ... कुछ दूसरे लोग मानते हैं कि जिंदगी में जो कुछ मिलता है वह कर्म के जरिए ही। ... सच भी है कि संयोगों से जीवन नहीं चलता। पेड़ से फल कभी संयोग से टपकते हैं। संयोग है कि आपको तब भूख भी लगी हो। लेकिन ज्यादा फल खाने हैं या बेचने हैं तो पेड़ से फल के टपकने का इंतजार नहीं किया जा सकता। तब तो फल तोड़ने ही पड़ते हैं। ... जिंदगी को निर्धारित करने में भाग्य बड़ा है या कर्म — यह जानने-समझने के लिए पढ़िए यह पुस्तिका।

सहयोग राशि : 12 रुपये



79. राष्ट्रीय नाक

विष्णु नागर

हम एक विकट दौर से गुजर रहे हैं। शब्दों के मायने बदल गए हैं। सत्ता का जनता से संबंध टूट चुका है। लेकिन शब्दों की बाजीगरी के जरिए वह ‘जन-हितैषी’, ‘लोकतांत्रिक’ और ‘समाजवादी’ होने का दावा अब भी कर रही है। इस भयानक समय में इस संग्रह में शामिल छह व्यंग्य रचनाएं अपने अनूठे अंदाज में सच्चाई का बयान कर रही हैं।

सहयोग राशि : 18 रुपये



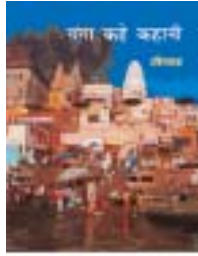
80. एक गांव की एक कहानी

शिवराम

“हमने सचाई जानने की कोशिश नहीं की। हमने बुरों और बुराई को पनपने दिया। हमने आपस में कोई तालमेल नहीं रखा! हमने परायेपन और अलगाव की सोच बनाए रखी। हम जुल्म और अन्याय बर्दाश्त करते रहे। हम परस्पर भेदभाव करते रहे। आगे ऐसा नहीं करें तभी अमन कायम रह सकता है।” शिवराम का यह नाटक धर्म और जाति की भावनाओं को जीनेवाले इस समाज में वैमनस्य और सौमनस्य के कारकों की तलाश करता है और बड़े रोचक ढंग से हर तरह की फिरकापरस्ती को बेनकाब करता है। यह नाटक अपने संवादों के जरिए अमन के संदेश के साथ-साथ उसके लिए संघर्ष की प्रेरणा भी देता है।

सहयोग राशि : 20 रुपये





81. गंगा कहे कहानी

इशितयाक

अब गंगा निर्मल जलवाली नदी नहीं रही। मनुष्य ने लालच-वश इसका खूब दोहन किया है। इसका पानी घटता जा रहा है। इसके जीव-जंतु मरते जा रहे हैं। ऊपर से तथाकथित साधु-संतों के शब्दजाल में फंसकर सामान्य-जन और भी कंगाल हो रहे हैं। 'गंगा कहे कहानी' नाटक में इन्हीं मुद्दों की ओर संकेत किया गया है।

सहयोग राशि : 20 रुपये

82. बलि

स्वयं प्रकाश

लड़की अपने सपनों के साथ बड़ी होती गई। उसके सपने साधारण थे— एक साधारण स्त्री के सपने। उन सपनों में फ्रॉक से लेकर थोड़ा अच्छा खाना और एक समझदार पति तक शामिल थे। उसका सबसे बड़ा सपना था कि उसके परिवार, रिश्तेदार और समाज के लोग उसे ठीक से समझें, उसे एक मानवीय संसार उपलब्ध कराएं। मगर विपन्न और संपन्न समाज ने इन सपनों को कोई तक्जो न दी। अंततः वह अपने गले में फांसी का फंदा लगाने को विवश हुई। क्या यह उसकी बलि नहीं थी?



सहयोग राशि : 20 रुपये

83. सूरज कब निकलेगा

स्वयं प्रकाश



बाढ़ हो या सूखा— इनके बीच पड़ा आदमी हो या जानवर, एकदम दयनीय हो जाता है। इतना दयनीय कि उसके जान के भी लाले पड़ जाते हैं। मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की यंत्रणाओं का शिकार होता है वह। क्या अकाल के ये रूप सिर्फ प्राकृतिक हैं? क्या इन पर काबू नहीं पाया जा सकता? क्या इन विपदाओं का कुछ लोग बेजा लाभ नहीं उठाते? संवेदना से लबालब इस संग्रह की ये दोनों कहानियाँ— 1. सूरज कब निकलेगा, और 2. नैनसी का धूड़ा — हमें ऐसे ही अनेक सवाल से रू-ब-रू कराती हैं।

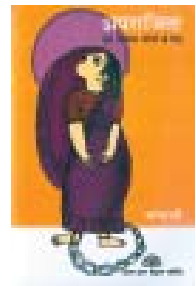
सहयोग राशि : 20 रुपये

84. अपराजिता

कात्यायनी

नारी की रचना इसलिए नहीं हुई है कि वह पुरुष की भोग्या बनकर उसका वंश चलाए। उसकी भी अपनी इच्छाएं हैं, आकांक्षाएं हैं, सोच है, समझ है। उसे घर-गृहस्थी तक सीमित करके, वस्त्रों-आभूषणों में सजा-संवार करके खुश नहीं रखा जा सकता। वह इन बंधनों से मुक्त रहना चाहती है। कात्यायनी की कविताएं स्त्री-पुरुष के बीच बराबरी की तरफदारी करती हैं। ये कविताएं नारी के पक्ष में जोरदार आवाज देती हैं— आजादी! आजादी!! आजादी!!!

सहयोग राशि : 15 रुपये

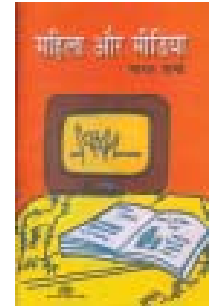


85. महिला और मीडिया

भारत शर्मा

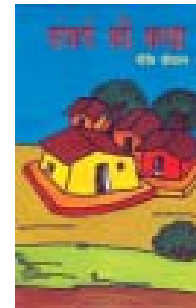
महिलाओं और दलितों का संघर्ष दुहरा है। आम कामगार के रूप में तो उन्हें शोषण का शिकार बनना ही पड़ता है, उन्हें यौन शोषण या वर्ण-व्यवस्था जनित शोषण का भी शिकार होना पड़ता है। पूंजीवादी व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति और भी खराब हुई है। वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में एक खरीदी-बेची जाने वाली वस्तु के रूप में बदल दी गई हैं। चाहे पत्र-पत्रिकाएं हों या टी.वी., महिलाओं से जुड़ी इन्हीं चीजों को परोसती हैं जिनसे उन्हें मुनाफा हो। इस पुस्तिका में नारी से जुड़े इसी परिदृश्य पर गौर किया गया है।

सहयोग राशि : 25 रुपये



86. संघर्ष की कथा

नीति दीवान



अवसर, प्रोत्साहन और सम्मान मिले तो महिलाएं क्या नहीं कर सकतीं! ग्राम पंचायतों में महिला और दलित आरक्षण के चलते बहुत सारी महिलाओं को सरपंच बनने का मौका मिला तो उन्होंने वह सब कुछ कर दिखाया जिन्हें अब तक पुरुष सरपंच भी नहीं कर सके थे। उनकी राहें आसान नहीं थीं। उन्हें पग-पग पर संघर्ष करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। इस पुस्तिका में दर्ज है ऐसी ही दस महिला सरपंचों की कहानियाँ।

सहयोग राशि : 25 रुपये

87. थार की गहराई से

रामेश्वर बागड़िया

भारत की पश्चिमी सीमा पर है विशाल थार का रेगिस्तान। क्या रेगिस्तान में रेत, तेज हवाओं और तपती धूप के अलावा कुछ और भी है? क्या रेगिस्तान में भी जीवन विराजता है? इस किताब में पढ़िए थार-रेगिस्तान के अनोखे किस्से।

सहयोग राशि : 20 रुपये



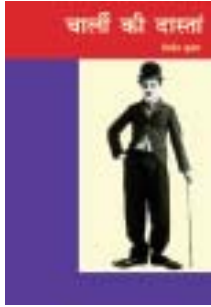
88. छुड़या की छबनी

दुनू



बनो एक कामगार महिला है। बहुत ही साधारण। वह रोज-रोज अपने पति से पिटती है। एक दिन वह दुखी मन से छुड़या पहुंचती और छबनी की छह देवियों— भूदेवी, श्रीदेवी, भाग्य-देवी, बुद्धि-देवी, स्त्री-देवी और महादेवी— से अपने मन की व्यथा कहती है। छह देवियां उसे छह समाधान सुझाती हैं, जो हैं आधे-अध रू... लेकिन उनसे मिलने का एक लाभ जरूर हुआ है कि बनो के पास अब अपना समाधान है। मगर क्या? सुनिए यह कहानी, बनो की जुबानी...

सहयोग राशि : 15 रुपये



89. चार्ली की दास्तां

विनोद कुमार

लंदन के नाटक कलाकारों के एक परिवार में जन्मा नाटा, दुबला लड़का गरीबी और भूख से लड़ते हुए जवान हुआ। और आगे चलकर इंग्लैंड, अमेरिका और पूरी दुनिया को ऐसा हंसाया और रूलाया, जैसा पहले या बाद में कोई और नहीं कर सका। उसका नाम था चार्ली चैप्लिन। यहां पढ़िए चार्ली की दास्तान।

सहयोग राशि: 20 रुपये

90. सिकंदर

प्लूटार्क

प्राचीन यूनान का नौजवान योद्धा सिकंदर मस्ती-मस्ती में पूरी दुनिया को जीतने निकला। एक के बाद एक बादशाह को हराते हुए सिकंदर ने पूरी दुनिया को उधेड़ दिया, और इतिहास को एक नई रवानी दी। इस किताब में पढ़िए सिकंदर की कहानी।

सहयोग राशि: 20 रुपये



91. कोलंबस

ग्लैडीस इस्लाख

उस वक्त माना जा चुका था कि पृथ्वी गोल है, लेकिन कोई पूरी पृथ्वी घूमकर नहीं देख पाया था, तब कोलंबस ने यह हिम्मत की थी। वह अनजान समुद्र में भारत का रास्ता ढूँढ़ने चला था, और उसे मिला अनजान अमरीका। इस किताब में पढ़िए यह सारी कहानी।

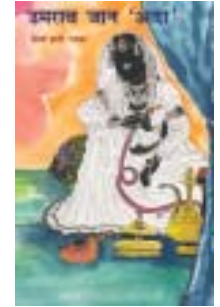
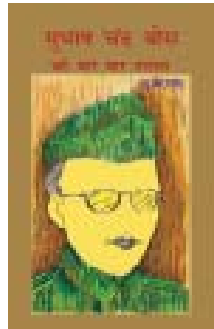
सहयोग राशि: 30 रुपये

92. सुभाषचंद्र बोस की बार बार तलाश

ए.के. राय

1945 में विमान दुर्घटना में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की मौत हो गई थी। लेकिन पिछले साठ सालों से हर साल उनकी पुण्य तिथि के दिन उनकी मौत पर प्रश्न किया जाता रहा है। ऐसा क्यों? भारतवासी उनकी मौत पर यकीन क्यों नहीं करते? या क्या भारतवासी उनको फिर से अपने नेताजी के रूप में पाना चाहते हैं? उनके नेतृत्व में क्या था जिसके लिए भारत प्यासा है? इस पुस्तक में मिलेंगे इन सवालों के जवाब।

सहयोग राशि: 15 रुपये



93. उमराव जान 'अदा'

मिर्जा हाजी 'रुस्वा'

उर्दू का शायद पहला उपन्यास, 1857 के काल में अवध प्रांत की एक औरत के जीवन के बारे में, आज भी पाठकों के दिल को छूता है।

सहयोग राशि: 30 रुपये



94. नजीर अकबराबादी

ज्योत्सना रघुवंशी

कहते हैं वे गालिब के उस्ताद थे, आधुनिक काल के पहले जनकवि थे, आगरा शहर के नजीर भारत के लोकजीवन के महान शायर थे। उनके जीवन और शायरी से परिचय है इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये

95. जन कहावतें

तापोश चक्रवर्ती

वेद झूठे हो सकते हैं, पर कहावतें नहीं। यह एक भारतीय कहावत है। कहावतें दो किस्म की पाई जाती हैं- मालिकों की कहावतें और जनता की कहावतें। मालिकों की कहावतें जनता को काबू में रखना चाहती हैं, और जन-कहावतें जनता में ताकत और आनंद और ज्ञान फैलाती हैं। यहां पढ़िए दुनियाभर की जन-कहावतें।

सहयोग राशि: 25 रुपये

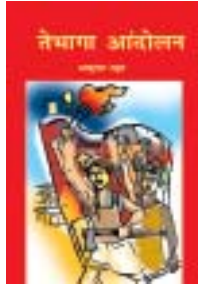


96. कुछ और जन कहावतें

तापोश चक्रवर्ती

वेद झूठे हो सकते हैं, पर कहावतें नहीं। यह एक भारतीय कहावत है। कहावतें दो किस्म की पाई जाती हैं- मालिकों की कहावतें और जनता की कहावतें। मालिकों की कहावतें जनता को काबू में रखना चाहती हैं, और जन-कहावतें जनता में ताकत और आनंद और ज्ञान फैलाती हैं। यहां पढ़िए दुनियाभर की जन-कहावतें।

सहयोग राशि: 25 रुपये



97. तेभागा विद्रोह

अब्दुल्ला रसूल

भारत का किसान मुश्किलों और बहकावों से घिरा हुआ होने के बावजूद, आखिर में अपने असली दुश्मन और दोस्त पहचान लेता है। तब उसका संघर्ष आंदोलन का रूप लेता है। बंगाल के किसानों के तेभागा आंदोलन की कहानी पढ़िए इस किताब में।

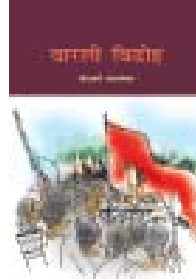
सहयोग राशि : 15 रुपये

98. वारली विद्रोह

गोदावरी पारुलेकर

भारत का किसान बहुत कष्ट झेलता है, बहुत अत्याचार सहता है, बहुत किस्म के छलावों से जूझता है, मगर अंत में जब अपने शत्रु और मित्र की सही पहचान करके उठ खड़ा होता है, तब उसे कोई नहीं रोक सकता। 1945-46 में बंबई के पास आदिवासी वारलियों का विद्रोह इसी परम्परा की सानदार मिसाल है। पढ़िए इस पुस्तक में।

सहयोग राशि: 25 रुपये



99. झारखण्ड के सवाल

ए. के. राय

बिरसा मुण्डा की जमीन खनिजों से भरी है। पिछड़े लोगों की यह जमीन एक लंबे संघर्ष के बाद अलग प्रदेश बन गई है, जिसका नाम झारखंड है। मगर इसके जन्म के लिए क्या-क्या मुद्दे उठे थे, और भविष्य में क्या रास्ते चुनने होंगे ताकि झारखंड के लोगों का जीवन खुशहाल हो? एहतियात जरूरी है ताकि झारखंड भी अन्य बदनिजामत वाले प्रदेशों जैसा न बन जाए। यह पुस्तक देती है ऐसे सवालों के जवाब जिनसे अन्य प्रदेशों के लोग भी अपने-अपने प्रदेशों के लिए दिशा पा सकते हैं।

सहयोग राशि: 35 रुपये

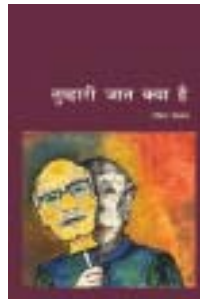


100. तुम्हारी जात क्या है

तमिल सेल्वन

मेरे पूर्वज बंदर, आपके पूर्वज बंदर, तो हमारी जात अलग क्यों? यह मेरा प्रदेश, वह तेरा प्रदेश, मैं खूबसूरत, तुम बदसूरत— ये सब कौन तय करता है और कैसे? हमारा इतिहास क्या रहा है और हमें कैसे बांटा जाता रहा है? इन सवालों के जवाब पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि: 20 रुपये



101. मुझे राजनीति पसंद है

तमिल सेल्वन

क्या राजनीति खादी कपड़े वालों का, या बंदूकधारी बाहुबलियों का, या फिर धन की थैलियों वाले सेठों का ही काम है? क्या आप और हमारे जैसे सीधे-साधे लोगों को राजनीति से दूर रहना चाहिए? या फिर, क्या राजनीति हम सब की जिम्मेदारी है? इन सवालों के बारे में है यह किताब।

सहयोग राशि: 30 रुपये



102. हंसते रहो

स्वाती

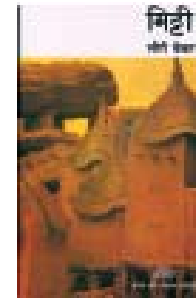
“अरे, तुम कितने बदल गए हो! तुम्हारे मोटे-काले बाल थे, पर अब चांद दिखता है। तुम्हारा लाल दकमता रंग था, आज पीले दिखाई दे रहे हो। तुम मोटे थे, अब पतले हो गए हो। किशनचन्द्र, तुम्हें क्या हो गया है?” डॉक्टर रामप्रसाद ने पूछा।

“लेकिन मैं किशनचन्द्र नहीं हूँ।”

“वाह भाई वाह! तुमने अपना नाम भी बदल डाला।”

इस पुस्तक में पढ़िए ऐसे ही कुल 35 मजेदार चुटकुले।

सहयोग राशि : 20 रुपये



103. मिट्टी

लौरी बेकर

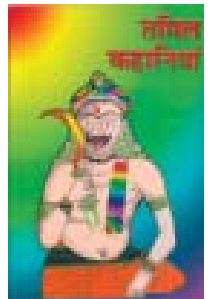
धरती, यानि मिट्टी के क्या-क्या गुण हैं? क्या हम मिट्टी को पूरी तरह से जान गए हैं? क्या मिट्टी से और नये आश्चर्यजनक प्रयोग हो सकते हैं? पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 25 रुपये

104. तमिल कहानियां

प्राचीन, नवीन और तमिल लोककथाओं का यह संग्रह हमें तमिलनाडु की संस्कृति से गहरा परिचय कराता है।

सहयोग राशि : 25 रुपये





105. मदारी

अलेक्सान्द्र कुप्रिन

बूढ़े मदारी की जिंदगी को गति देनेवाली चीजें थीं— एक पुराना बाजा, एक सफेद बालों वाला कुत्ता, एक पक्षी और एक बारह बरस का लड़का। इन्हीं के सहारे वह अपना भी पेट पालता और इनका भी। एक दिन ऐसा हुआ कि मदारी के हाथ से कुत्ता निकल गया। फिर तो आनेवाले दुख की कल्पना से ही वह सिहर गया। किंतु लड़का चतुर था और उसने वह कर दिखाया जो संभव नहीं लगता था। कैसी थी मदारी और उसके सहयोगियों की जिंदगी पढ़िए इस कहानी में।

सहयोग राशि : 25 रुपये

106. रोबोट और पतंगी

व्यूताते ज़िलिसकायते

कितना काबिल लगता था वह रोबोट... लोग उससे कितने चमत्कृत होते थे! पर वह जो कुछ कर सकता था वह सब यांत्रिक था, सिखाया हुआ, निर्देशित ... उसमें उसकी अपनी इच्छा कहीं भी शामिल नहीं थी। ऐसे मशीनी मानव के दिल में पहली बार कोमल भावनाएं धड़कने लगीं, जब उसकी प्रिय छोटी पतंगी ने तड़पते हुए पूछा, “ओह थ्रुम, तुमने बचाया क्यों नहीं?” न चाहते हुए भी रोबोट यही कह पाया, “मैं अब कुछ घिसे-पिटे सवालों का जवाब दे रहा हूं। हा हा!” दूसरों के निर्देश पर चलने वाला किस हद तक मजबूर हो जाता है, पढ़िए इस मार्मिक कहानी में।

सहयोग राशि : 10 रुपये



107. सूली ऊपर सेज

शिवराम



सेज यानी विशेष आर्थिक क्षेत्र। सरकार ने सेज नीति की घोषणा में कहा है कि इससे देश का तीव्र आर्थिक विकास होगा। कल-कारखाने खुलेंगे तो लोगों को रोजगार मिलेगा। उत्पादित वस्तुओं के निर्यात से देश में समृद्धि आएगी। किंतु इस नीति के तहत किसानों से जमीन लेने से वे बेरोजगार हो रहे हैं, सामान्य उद्योग पिछड़ रहे हैं और सेज वाले पूंजीपति इन जमीनों का मनचाहा उपयोग कर मालामाल हो रहे हैं। आखिर क्या है सेज, पढ़िए इसके विविध पहलुओं के बारे में इस पुस्तिका में।

सहयोग राशि : 25 रुपये

108. गर्व से कहो कि हमारी बेटियां हैं

देश के बहुत बड़े हिस्से में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों का घटता अनुपात इस बात का प्रमाण है कि हमारे समाज में अभी भी सामान्यतः लड़कियों के जन्म को अच्छा नहीं माना जाता है। उन्हें अभी भी अभिशाप माना जाता है। लेकिन क्या सचमुच बेटियां अभिशाप हैं? हमने अपने समाज के कुछ संवेदनशील वैसे रचनाकर्मियों से इस बारे में बातें कीं जिनकी बेटियां हैं। बेटियों के बारे में क्या है उनकी धारणाएं, पढ़िए इस पुस्तिका में उनके ही शब्दों में।

सहयोग राशि : 25 रुपये



109. प्रतिद्वंदी भूत

एल्गार्न ब्लैकवुड

एक न्यूयॉर्कवासी को विरासत में जायदाद तो मिलती है मगर साथ में एक नहीं, दो भूत भी विरासत में उसके साथ हो लेते हैं। जीवन मुश्किल होने लगता है। फिर क्या होता है? पढ़िए इस भूत कहानी में।

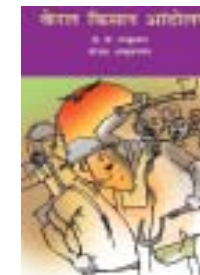
सहयोग राशि : 15 रुपये

110. केरल किसान आंदोलन

टी.के. रामकृष्णन, वी.एस. अच्युतानन्दन

भारतीय किसानों ने समय-समय पर यह दिखाया है कि तमाम मुश्किलों और बहकावों के बावजूद वह आखिरकार अपने दोस्त और दुश्मन पहचान लेता है केरल में किसानों के आंदोलन की कहानी पढ़िए इस किताब में।

सहयोग राशि : 25 रुपये



111. भुतहा रिक्शा

रडयार्ड किपलिंग

भारत में अंग्रेजों के जमाने में एक नौजवान शिमला में एक युवती की दोस्ती बार-बार टुकराता है। कुछ साल बाद उस महिला की मौत हो जाती है। लेकिन जैसे ही बात आगे बढ़ने लगती है। एक रिक्शा में बैठकर कौन आने लगता है? पढ़िए इस भूत कहानी में।

सहयोग राशि : 15 रुपये

112. रेड चीफ का अफहरण

ओ. हेनरी

अमरीका में दो बेरोजगार युवक प्लान बनाकर एक अमीर बाप के दो बच्चों का अपहरण करते हैं। लेकिन बालक इतना नटखट और जिद्दी रहता है कि उसका बाप शायद उसे वापिस लेना ही नहीं चाहता। फिर क्या होता है, पढ़िए इस मशहूर कहानी में।

सहयोग राशि : 15 रुपये

